facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 23 फरवरी 2026 ● वर्ष 7 ● अंक 32 ● मूल्यः 5 रुपए

अभिषेक शर्मा की जर्सी पहेली

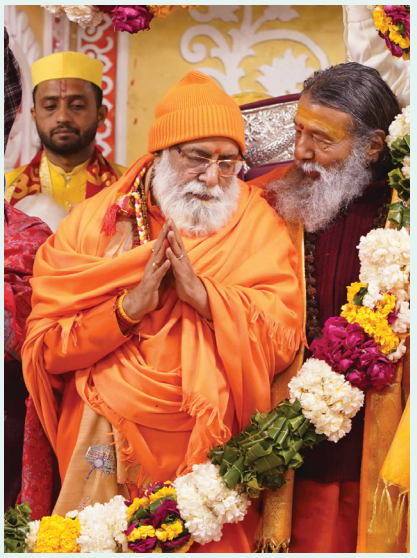

संसार के प्रपंचों से मुक्त कर रहे हैं पूज्य स्वामी जी

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी

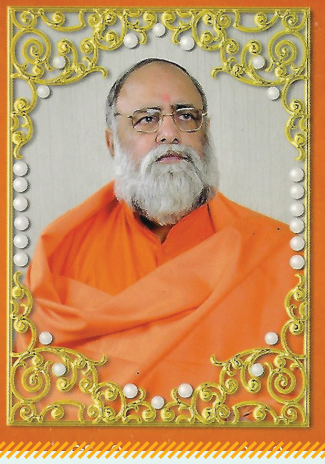

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

●

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

●

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

बंगाल के नाम प्रधानमंत्री का खुला पत्र

भावनाओं और राजनीति के बीच बदलाव की अपील ▶▶ महिलाओं की सुरक्षा, युवाओं का रोजगार और विकास बना पत्र का केंद्र

@ भारतश्री ब्यूरो

चुनाव से पहले का समय हमेशा सिर्फ राजनीति का नहीं, बल्कि भावनाओं का भी समय होता है। जब नेता सीधे जनता से संवाद करते हैं, तो शब्द केवल शब्द नहीं रहते, वे उम्मीद, भरोसा और संदेश बन जाते हैं। इसी माहौल के बीच देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल के मतदाताओं के नाम एक खुला पत्र लिखा है, जिसने राज्य की राजनीति को फिर गर्म कर दिया है।यह पत्र केवल चुनावी अपील नहीं है, बल्कि एक ऐसी राजनीतिक कहानी की तरह सामने आया है जिसमें विकास, सुरक्षा, पहचान और भविष्य की बात साथ-साथ चलती है।

जय मां काली से शुरू हुआ संदेश

प्रधानमंत्री ने अपने पत्र की शुरुआत जय मां काली से की। यह शुरुआत सिर्फ धार्मिक आस्था का संकेत नहीं थी, बल्कि बंगाल की सांस्कृतिक आत्मा से जुड़ने का प्रयास भी माना जा रहा है।पत्र में उन्होंने लिखा कि कुछ ही महीनों में पश्चिम बंगाल का भाग्य तय होने वाला है। उन्होंने कहा कि यह चुनाव केवल सरकार चुनने का नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों का भविष्य तय करने का अवसर है।प्रधानमंत्री के शब्दों में एक भावनात्मक आग्रह दिखाई देता है। उन्होंने लिखा कि "सोनार बंगाल" का सपना देखने वाला हर नागरिक आज बदलाव चाहता है।

राजनीति से ज्यादा भावनाओं की भाषा

पत्र का सबसे खास पहलू उसकी भाषा रही। इसमें आरोप भी हैं, लेकिन साथ ही भावनात्मक अपील भी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि राज्य की माताएं और बहनें खुद को सुरक्षित महसूस नहीं कर रही हैं।यह बयान सीधे लोगों के दैनिक जीवन से जुड़ता है। राजनीति तब ज्यादा प्रभाव डालती है जब वह आंकड़ों से निकलकर लोगों के अनुभवों तक पहुंचती है।गांवों से लेकर शहरों तक, सुरक्षा और रोजगार दो ऐसे मुद्दे हैं जो हर परिवार की चर्चा में शामिल रहते हैं। पत्र में इन्हीं मुद्दों को केंद्र में रखा गया।

'एबार भाजपा सरकार' का नारा

प्रधानमंत्री ने अपने पत्र में एबार भाजपा सरकार का नारा देते हुए सीधे तौर पर भाजपा के पक्ष में समर्थन मांगा।उन्होंने लिखा कि अब समय आ गया है कि पश्चिम बंगाल विकास और सुशासन की राह चुने।यह नारा नया नहीं है, लेकिन इस बार इसे भावनात्मक संदेश के साथ जोड़ा गया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह रणनीति मतदाताओं के मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर बनाई गई है।पत्र में प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार के पिछले 11 वर्षों के कामों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने जनकल्याण को प्राथमिकता दी है और गरीबों, किसानों, महिलाओं और युवाओं के लिए कई योजनाएं चलाई गई हैं।उन्होंने दावा किया कि राज्य सरकार के सहयोग के बिना भी केंद्र की योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुंचा है।प्रधानमंत्री के अनुसार करीब 5 करोड़ लोग जन-धन योजना से जुड़े ,स्वच्छ भारत अभियान के तहत 85 लाख शौचालय बने।उज्ज्वला योजना से 1 करोड़ से ज्यादा परिवारों को गैस कनेक्शन मिला। अटल पेंशन योजना से 56 लाख लोग जुड़े। किसान सम्मान निधि से 52 लाख किसानों को सहायता मिली। इन आंकड़ों के जरिए उन्होंने यह संदेश देने की कोशिश की कि केंद्र सरकार सीधे लोगों तक पहुंच रही है।

गांव की कहानी, बदलती जिंदगी

अगर किसी गांव में जाएं तो इन योजनाओं का असर महसूस किया जा सकता है। पहले जहां रसोई में लकड़ी का धुआं होता था, वहां अब गैस सिलेंडर दिखाई देता है। जहां खुले में शौच आम बात थी, वहां अब शौचालय बने हैं।राजनीति अक्सर बड़े मंचों पर दिखाई देती है, लेकिन उसका असली असर छोटे घरों में दिखता है।प्रधानमंत्री ने इसी मानवीय बदलाव को अपने पत्र में प्रमुखता दी।पत्र का दूसरा हिस्सा पूरी तरह राजनीतिक था। प्रधानमंत्री ने राज्य की मौजूदा सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि लंबे समय से गलत नीतियों ने पश्चिम बंगाल को पीछे धकेल दिया है। हालांकि उन्होंने सीधे नाम नहीं लिया, लेकिन उनका संकेत साफ तौर पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की सरकार की ओर था।उन्होंने लिखा कि कभी औद्योगिक विकास में अग्रणी रहा बंगाल आज रोजगार के संकट से जूझ रहा है।यह मुद्दा खासकर युवाओं से जुड़ा है। बेरोजगारी आज भी चुनावी राजनीति का सबसे बड़ा विषय बना हुआ है।पत्र में प्रधानमंत्री ने लिखा कि रोजगार की कमी के कारण युवा राज्य छोड़कर दूसरे शहरों में जा रहे हैं।यह बात केवल राजनीतिक बयान नहीं है, बल्कि एक सामाजिक सच्चाई भी है। पश्चिम बंगाल के कई जिलों से बड़ी संख्या में युवा काम की तलाश में दूसरे राज्योमें जाते हैं।जब कोई युवा घर छोड़ता है तो सिर्फ नौकरी नहीं बदलती, पूरा परिवार बदल जाता है।राजनीति में ऐसे मानवीय पहलू अक्सर गहरे असर छोड़ते हैं।प्रधानमंत्री ने अवैध घुसपैठ को भी गंभीर मुद्दा बताया। उन्होंने कहा कि इससे राज्य की सामाजिक संरचना प्रभावित हो रही है।साथ ही महिलाओं के खिलाफ अपराध का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कानून व्यवस्था मजबूत होना जरूरी है। राजनीतिक दृष्टि से यह मुद्दा चुनाव में बड़ा प्रभाव डाल सकता है क्योंकि सुरक्षा हमेशा संवेदनशील विषय रहता है।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

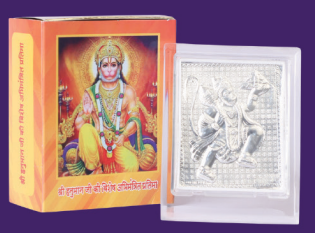

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

ई-मेल से दहली राजधानी

स्कूलों से लेकर लाल किले तक बम धमकी, घंटों चला सर्च ऑपरेशन

@ मनीष पांडेय

राजधानी दिल्ली में सोमवार सुबह उस समय अफरा-तफरी का माहौल बन गया जब धौला कुआं स्थित आर्मी पब्लिक स्कूल धौला कुआं और लोधी रोड के एयर फोर्स बाल भारती स्कूल लोधी रोड को बम से उड़ाने की धमकी वाला इलेक्ट्रॉनिक संदेश मिला। संदेश में दिल्ली विधानसभा, दिल्ली सचिवालय और ऐतिहासिक लाल किला का भी उल्लेख किया गया था। सूचना मिलते ही पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां तुरंत सक्रिय हो गईं।

स्कूलों में तुरंत खाली कराया गया परिसर

धमकी की जानकारी मिलते ही दोनों स्कूलों के प्रबंधन ने बिना देर किए स्थानीय पुलिस को सूचना दी। इसके बाद सुरक्षा के मद्देनजर स्कूल परिसर को तत्काल खाली कराया गया। छात्रों को शांतिपूर्वक कक्षाओं से बाहर निकालकर सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया।छोटे बच्चों को शुरुआत में स्थिति का अंदाजा नहीं था, लेकिन शिक्षकों ने उन्हें संभाला और घबराने से रोका। कई अभिभावकों को भी तुरंत सूचना दी गई, जिसके बाद वे अपने बच्चों को लेने स्कूल पहुंचे।

बम निरोधक दल ने की गहन जांच

पुलिस के साथ बम निरोधक दल और श्वान दस्ते को भी मौके पर बुलाया गया। स्कूल परिसर के हर हिस्से की बारीकी से जांच की गई। कक्षाओं, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, मैदान और वाहनों की जांच की गई।करीब कई घंटों तक चली जांच के बाद किसी भी प्रकार की संदिग्ध वस्तु नहीं मिली। अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षा के सभी मानकों का पालन करते हुए जांच की गई।

राजधानी के महत्वपूर्ण स्थलों पर भी बढ़ाई गई सुरक्षा

धमकी भरे संदेश में दिल्ली विधानसभा, दिल्ली सचिवालय और लाल किले का नाम आने के बाद इन स्थानों पर भी सुरक्षा बढ़ा दी गई। प्रवेश द्वारों पर जांच कड़ी कर दी गई और अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए गए।लाल किले के आसपास पर्यटकों की आवाजाही जारी रही, लेकिन सुरक्षा व्यवस्था सामान्य दिनों की तुलना में अधिक सतर्क दिखाई दी।

जांच में धमकी निकली झूठीख्

दिल्ली से सटे गुरुग्राम में भी सुरक्षा को लेकर सतर्कता बढ़ाई गई। राजीव चौक क्षेत्र के एयर फोर्स स्कूल को एहतियातन खाली कराया गया। हालांकि संदेश में इस स्कूल का नाम स्पष्ट नहीं था, लेकिन सुरक्षा एजेंसियों ने जोखिम नहीं लिया। प्रारंभिक जांच के बाद अधिकारियों ने बताया कि किसी भी स्थान पर विस्फोटक सामग्री नहीं मिली। इसके बाद इसे झूठी धमकी माना गया। हालांकि, पुलिस ने इलेक्ट्रॉनिक संदेश भेजने वाले व्यक्ति की पहचान के लिए तकनीकी जांच शुरू कर दी है।

साइबर विशेषज्ञों की मदद से संदेश के स्रोत का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है। घटना के दौरान कई अभिभावक चिंतित नजर आए। कुछ अभिभावकों ने बताया कि सूचना मिलते ही वे तुरंत स्कूल पहुंचे। बच्चों को सुरक्षित देखकर उन्होंने राहत की सांस ली।

शिक्षकों का कहना है कि ऐसी परिस्थितियों में सबसे बड़ी जिम्मेदारी बच्चों को शांत रखना होती है।

बढ़ती झूठी धमकियां बनी चुनौती

पिछले कुछ समय में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से झूठी धमकियों के मामले बढ़े हैं। सुरक्षा एजेंसियां हर सूचना को गंभीरता से लेती हैं ताकि किसी भी संभावित खतरे को समय रहते रोका जा सके।विशेषज्ञों का मानना है कि तकनीक के दुरुपयोग को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने की जरूरत है।इस घटना ने एक बार फिर स्पष्ट कर दिया कि समय पर मिली सूचना और त्वरित कार्रवाई से बड़े खतरे को टाला जा सकता है। सुरक्षा एजेंसियों की सक्रियता के कारण स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में रही।कुछ घंटों की चिंता के बाद स्कूलों का माहौल सामान्य हुआ, लेकिन इस घटना ने सुरक्षा को लेकर कई सवाल जरूर खड़े कर दिए हैं। राजधानी में बच्चों की सुरक्षा को लेकर प्रशासन अब और अधिक सतर्क दिखाई दे रहा है।

तिहाड़ से डांस फ्लोर तक

मुश्किल दिनों के बाद भतीजी की शादी में झूमते दिखे राजपाल यादव

@ शोभित यादव

मुश्किल वक्त अक्सर इंसान को तोड़ता भी है और मजबूत भी बनाता है। हास्य कलाकार राजपाल यादव के लिए पिछले कुछ हफ्ते ऐसे ही रहे। अदालत, कानूनी प्रक्रिया और जेल की दीवारों के बीच गुजरे दिन किसी भी कलाकार के लिए आसान नहीं होते, लेकिन जिंदगी का रंगमंच कभी खाली नहीं रहता। जेल से बाहर आने के कुछ ही दिनों बाद राजपाल यादव अपने परिवार के बीच लौटे और अब एक शादी समारोह में उनका मुस्कुराता चेहरा और नाचते कदम लोगों को यह याद दिला रहे हैं कि कठिन समय के बाद खुशियां भी लौटती हैं।यह कहानी सिर्फ एक अभिनेता की नहीं, बल्कि उस इंसान की है जो संघर्षों से गुजरकर फिर अपने लोगों के बीच खड़ा दिखाई देता है।

11 दिन की जेल और लंबी चिंता

करीब 9 करोड़ रुपये के लोन और चेक बाउंस मामले में कानूनी कार्रवाई के बाद राजपाल यादव को दिल्ली के तिहाड़ जेल में लगभग 11 दिन बिताने पड़े। यह समय उनके लिए मानसिक रूप से बेहद चुनौतीपूर्ण रहा। एक ऐसा कलाकार, जिसने वर्षों तक लोगों को हंसाया, अचानक खुद गंभीर परिस्थितियों में घिर गया।

मामला अदालत में चल रहा था और आर्थिक विवादों के चलते उन्हें सजा का सामना करना पड़ा। हालांकि, उनके वकीलों ने अदालत में बताया कि परिवार में एक महत्वपूर्ण शादी है, जिसमें उनकी मौजूदगी जरूरी है। इसके बाद दिल्ली हाई कोर्ट ने उन्हें अंतरिम जमानत दे दी। यह राहत सिर्फ कानूनी नहीं थी, बल्कि भावनात्मक भी थी।

परिवार के बीच लौटे कलाकार

जेल से बाहर आने के बाद राजपाल यादव सीधे अपने परिवार के बीच पहुंचे। घर में भतीजी की शादी की तैयारियां चल रही थीं। परिवार के लोगों ने उन्हें गले लगाया और माहौल धीरे-धीरे उत्सव में बदल गया।शादी का माहौल अपने आप में भावनाओं से भरा होता है। ऐसे में राजपाल यादव का चेहरा भी हल्का और सहज दिखा। परिवार के सदस्यों के साथ बैठकर उन्होंने बातचीत की, पुराने किस्से याद किए और शादी के कार्यक्रमों में शामिल हुए।यहीं से एक वीडियो सामने आया, जिसने सोशल मीडिया पर लोगों का ध्यान खींच लिया।

डांस फ्लोर पर लौट आई मुस्कान

शादी के एक समारोह में राजपाल यादव डांस फ्लोर पर नजर आए। उन्होंने पारंपरिक धोती-कुर्ता पहन रखा था और परिवार की महिलाओं के साथ खुशी से झूम रहे थे। यह दृश्य उनके प्रशंसकों के लिए खास था, क्योंकि कुछ ही दिन पहले तक वह कानूनी परेशानियों में घिरे हुए थे। वीडियो में वह हेल्लो ब्रदर के मशहूर गाने सरकी जो सर से धीरे-धीरे पर डांस करते दिखाई दिए। यह गाना सलमान खान की फिल्म का लोकप्रिय गीत है, जो आज भी शादी समारोहों में खूब बजता है।डांस के दौरान राजपाल यादव के चेहरे पर वही पुरानी मासूम मुस्कान दिखाई दी, जिसने उन्हें बॉलीवुड में अलग पहचान दिलाई।यह सिर्फ एक डांस नहीं था, बल्कि मुश्किल दिनों से बाहर आने की एक भावनात्मक झलक भी थी।

सोशल मीडिया पर वायरल हुआ वीडियो

शादी का यह वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया। कई लोगों ने इसे देखकर कहा कि कलाकार की असली ताकत यही होती है कि वह हर परिस्थिति में मुस्कान बनाए रखता है।फैंस ने कमेंट्स में लिखा कि राजपाल यादव हमेशा लोगों को हंसाते रहे हैं और उन्हें जिंदगी में आगे बढ़ते रहना चाहिए। कुछ लोगों ने उनके संघर्ष के दौर को याद करते हुए उनके लिए शुभकामनाएं भी दीं। यह वीडियो सिर्फ मनोरंजन नहीं था, बल्कि यह संदेश भी दे रहा था कि जिंदगी रुकती नहीं है।

बॉलीवुड से मिला साथ

जब राजपाल यादव जेल में थे, तब फिल्म इंडस्ट्री के कई लोगों ने उनका समर्थन किया। खास तौर पर अभिनेता ने उन्हें एक फिल्म का प्रस्ताव दिया और यहां तक कहा कि जरूरत हो तो फीस भी पहले दे दी जाएगी।बॉलीवुड में यह समर्थन उनके लंबे करियर और रिश्तों की ताकत को भी दिखाता है।

राजपाल यादव ने अपने अभिनय से जो पहचान बनाई है, वह सिर्फ कॉमेडी तक सीमित नहीं है, बल्कि लोगों के दिलों में जगह बनाने वाली है।

करियर की नई शुरुआत

जेल से बाहर आने के बाद राजपाल यादव ने काम पर वापसी शुरू कर दी है। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपने वैनिटी वैन का वीडियो भी शेयर किया, जिसमें वह शूटिंग की तैयारी करते दिखाई दिए।इस साल उनकी कई फिल्में आने वाली हैं, जिनमें Welcome to the Jungle और Bhoot Bangla शामिल हैं।इन फिल्मों के जरिए वह फिर से दर्शकों को हंसाने के लिए तैयार हैं।

संघर्ष और कलाकार का मन

राजपाल यादव का जीवन संघर्षों से भरा रहा है। छोटे शहर से निकलकर बॉलीवुड तक का सफर आसान नहीं था। उन्होंने छोटे-छोटे रोल से शुरुआत की और धीरे-धीरे अपनी अलग पहचान बनाई।उनकी कॉमेडी का अंदाज अलग रहा। चेहरे के भाव, संवाद की टाइमिंग और सहज अभिनय ने उन्हें खास बनाया।लेकिन आर्थिक विवाद और कानूनी मामलों ने उनके जीवन में कठिन मोड़ ला दिया। ऐसे समय में कलाकार का मन भी टूट सकता है, लेकिन राजपाल यादव ने खुद को संभाला।शादी में उनका डांस इसी मानसिक मजबूती का प्रतीक माना जा रहा है। इस पूरे घटनाक्रम में एक बात साफ दिखी कि परिवार हर मुश्किल में सबसे बड़ा सहारा होता है। भतीजी की शादी सिर्फ एक पारिवारिक कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि राजपाल यादव के लिए भावनात्मक वापसी का मौका भी थी।परिवार के बीच बैठकर उन्होंने सामान्य जीवन की ओर लौटने की कोशिश की। यही वजह है कि शादी के वीडियो में वह बिल्कुल सहज नजर आए। कई बार जिंदगी में बड़े मंच से ज्यादा जरूरी होता है घर का आंगन।

दर्शकों का प्यार अभी भी कायम

राजपाल यादव के प्रशंसकों की संख्या आज भी बहुत बड़ी है। टीवी, सोशल मीडिया और फिल्मों के जरिए वह लगातार लोगों तक पहुंचते रहे हैं।उनकी कॉमिक भूमिकाएं आज भी मीम्स और वीडियो क्लिप्स में वायरल होती रहती हैं। यही वजह है कि मुश्किल दौर में भी दर्शकों का समर्थन उन्हें मिलता रहा।यह समर्थन किसी भी कलाकार के लिए सबसे बड़ी ताकत होता है।

कानूनी प्रक्रिया अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुई है, लेकिन राजपाल यादव ने अपने काम पर ध्यान देना शुरू कर दिया है। फिल्मों की शूटिंग, नए प्रोजेक्ट्स और दर्शकों का प्यार उनके लिए नई शुरुआत का संकेत है। उनका यह सफर बताता है कि जिंदगी में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, लेकिन अगर इंसान हार न माने तो वह फिर खड़ा हो सकता है। भतीजी की शादी में उनका डांस सिर्फ एक वायरल वीडियो नहीं, बल्कि उम्मीद की एक झलक बन गया है।

एक कलाकार की वापसी की कहानी

जब रोशनी बुझती है तो अंधेरा गहरा लगता है, लेकिन मंच पर लौटने वाला कलाकार जानता है कि तालियां फिर बजेंगी। राजपाल यादव का यह दौर उसी वापसी की कहानी है।जेल की सलाखों से लेकर शादी के डांस फ्लोर तक का यह सफर दिखाता है कि जिंदगी हमेशा दूसरा मौका देती है। और शायद यही वजह है कि उस शादी में बजते गाने के साथ जब राजपाल यादव मुस्कुराते हुए झूम रहे थे, तो सिर्फ एक कलाकार नहीं, बल्कि संघर्ष से लौटता एक इंसान दिखाई दे रहा था।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

आस्था के केंद्र पर आरोपों की आंच

संवेदनशील मोड़ पर पहुंचा शंकराचार्य मामला

@ रिंकू विश्वकर्मा

16 फरवरी के बाद से उत्तर प्रदेश के धार्मिक और राजनीतिक माहौल में एक ऐसा मामला चर्चा का केंद्र बन गया है, जिसमें आस्था, कानून और आरोप तीनों एक साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं। बच्चों से कथित यौन शोषण के आरोपों में एफआईआर दर्ज होने के बाद पुलिस ने जांच तेज कर दी है और अब मामला नए मोड़ पर पहुंचता नजर आ रहा है। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के खिलाफ दर्ज मामले में प्रयागराज पुलिस की टीम सोमवार दोपहर काशी पहुंची। सूत्रों के अनुसार टीम उनसे पूछताछ कर सकती है और जरूरत पड़ने पर गिरफ्तारी की कार्रवाई भी संभव है।हालांकि, इस पूरे घटनाक्रम के बीच शंकराचार्य ने साफ कहा है कि वे कहीं भागने वाले नहीं हैं और कानून का सामना करेंगे।

आश्रम में रणनीति बैठक

सोमवार सुबह वाराणसी स्थित आश्रम में एक अलग ही माहौल था। सामान्य दिनों की तरह धार्मिक गतिविधियां चल रही थीं, लेकिन भीतर एक कमरे में वकीलों के साथ महत्वपूर्ण बैठक हो रही थी। बताया जा रहा है कि शंकराचार्य ने अपने बचाव को लेकर कानूनी विकल्पों पर चर्चा की।संभावना जताई जा रही है कि वे गिरफ्तारी से बचने के लिए हाईकोर्ट का रुख कर सकते हैं।बैठक के बाद आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने शांत स्वर में कहा, "मैं कहीं नहीं जा रहा हूं। पुलिस का सामना करूंगा। जिन बच्चों के बारे में कहा जा रहा है, वे मेरे गुरुकुल के छात्र नहीं हैं।"उन्होंने यह भी कहा कि मामले की जांच किसी दूसरे राज्य की पुलिस से कराई जानी चाहिए क्योंकि जनता का भरोसा निष्पक्ष जांच पर होना चाहिए।

जांच की शुरुआत कैसे हुई

इस मामले की शुरुआत 24 जनवरी को हुई, जब शिकायतकर्ता आशुतोष ब्रह्मचारी ने पुलिस कमिश्नर को शिकायत दी। आरोप था कि माघ मेला-2026 और महाकुंभ-2025 के दौरान बच्चों के साथ गलत व्यवहार किया गया।जब शिकायत पर तत्काल कार्रवाई नहीं हुई तो 8 फरवरी को शिकायतकर्ता ने अदालत का दरवाजा खटखटाया और POCSO Act से जुड़े प्रावधानों के तहत मामला दर्ज करने की मांग की।13 फरवरी को दो बच्चों को कोर्ट में पेश किया गया।

21 फरवरी को बच्चों के बयान कैमरे के सामने दर्ज किए गए।इसके बाद अदालत के आदेश पर झूंसी थाने में एफआईआर दर्ज कर ली गई।मामले में शंकराचार्य के साथ उनके शिष्य मुकुंदानंद और कुछ अज्ञात लोगों को भी आरोपी बनाया गया है।

माघ मेला क्षेत्र में पुलिस जांच

रविवार को पुलिस टीम शिकायतकर्ता के साथ माघ मेला क्षेत्र पहुंची। वहां उस स्थान का निरीक्षण किया गया जहां शंकराचार्य का शिविर लगा था।पुलिस ने शिविर के प्रवेश और निकास मार्गों का नक्शा तैयार किया और आसपास के क्षेत्र का भी निरीक्षण किया। जांच अधिकारी यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि कथित घटनाओं के समय वहां की परिस्थितियां क्या थीं।एक अधिकारी ने बताया कि जांच पूरी तरह साक्ष्यों के आधार पर आगे बढ़ाई जा रही है।

शंकराचार्य ने उठाए कई गंभीर सवाल

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान शंकराचार्य ने कई गंभीर सवाल भी उठाए। उन्होंने कहा कि बच्चों के वास्तविक अभिभावकों की जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है और जुवेनाइल प्रक्रिया का पालन भी स्पष्ट नहीं है।उन्होंने आरोप लगाया कि एक हिस्ट्रीशीटर व्यक्ति बच्चों का अभिभावक बनकर सामने आ रहा है, जो संदेह पैदा करता है। उनका कहना था कि यदि अपराधी होता तो पुलिस से डरता, लेकिन उन्हें किसी जांच से डर नहीं है।उन्होंने कहा, "मैं अपने मठ के कार्य और गौ सेवा पर ध्यान देना चाहता हूं। बाकी कानूनी प्रक्रिया वकील देख रहे हैं।"

राजनीति का एंगल भी आया सामने

मामले ने उस समय नया मोड़ लिया जब शंकराचार्य ने बयान दिया कि गौ हत्या के खिलाफ उनकी आवाज उठाने के कारण उन्हें निशाना बनाया जा रहा है।उन्होंने कहा कि उनकी आवाज को दबाने की कोशिश की जा रही है और यह केवल एक कानूनी मामला नहीं, बल्कि वैचारिक संघर्ष भी है।उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार पर भी अप्रत्यक्ष टिप्पणी करते हुए कहा कि कुछ लोग नहीं चाहते कि धार्मिक नेता सामाजिक मुद्दों पर बोलें।हालांकि सरकार की ओर से इस बयान पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है।उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री Yogi Adityanath पहले भी कई बार कह चुके हैं कि कानून सभी के लिए समान है और किसी को भी कानून से ऊपर नहीं माना जाएगा।

आश्रम के बाहर का माहौल

यह मामला इसलिए भी संवेदनशील है क्योंकि इसमें एक प्रमुख धार्मिक पद से जुड़े संत का नाम सामने आया है।देश में शंकराचार्य की परंपरा को अत्यंत सम्मान के साथ देखा जाता है। सदियों से चार पीठों के शंकराचार्य सनातन परंपरा के प्रमुख मार्गदर्शक माने जाते हैं।ऐसे में जब किसी धार्मिक व्यक्तित्व पर आरोप लगता है तो समाज में स्वाभाविक रूप से दो तरह की प्रतिक्रियाएं सामने आती हैं। एक वर्ग आरोपों की निष्पक्ष जांच की मांग करता है, जबकि दूसरा वर्ग इसे आस्था पर हमला मानता है। वाराणसी आश्रम के बाहर सोमवार को बड़ी संख्या में समर्थक भी पहुंचे। कुछ लोग हाथों में पोस्टर लेकर आए थे और उन्होंने कहा कि उन्हें अपने गुरु पर पूरा विश्वास है। एक बुजुर्ग श्रद्धालु ने कहा कि हम वर्षों से इन्हें जानते हैं। सच सामने आना चाहिए। वहीं कुछ लोग यह भी कहते दिखे कि कानून को अपना काम करने देना चाहिए। यह दृश्य बताता है कि मामला केवल कानूनी नहीं, भावनात्मक भी है। अब इस पूरे मामले में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदालत की होगी।बच्चों के बयान, मेडिकल रिपोर्ट, घटनास्थल के साक्ष्य और गवाहों के आधार पर जांच आगे बढ़ेगी। कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे मामलों में जल्दबाजी से निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होता।सत्य अदालत की प्रक्रिया से ही सामने आता है। जैसे ही मामला सामने आया, सोशल मीडिया पर भी तीखी बहस शुरू हो गई। कुछ लोग इसे धार्मिक राजनीति से जोड़ रहे हैं तो कुछ इसे कानून और न्याय का मामला बता रहे हैं। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे मामलों में तथ्यों की पुष्टि से पहले निष्कर्ष निकालना समाज में भ्रम पैदा कर सकता है।

आरोप सही साबित होते हैं तो?

यह मामला केवल एक एफआईआर तक सीमित नहीं है।इसमें कई स्तर हैं आस्था, राजनीति, कानून और समाज।अगर आरोप सही साबित होते हैं तो यह गंभीर अपराध होगा। अगर आरोप गलत साबित होते हैं तो यह एक बड़ी साजिश भी मानी जा सकती है।यानी दोनों ही स्थितियों में जांच की निष्पक्षता बेहद जरूरी है।

पुलिस टीम जल्द ही शंकराचार्य से पूछताछ कर सकती है। कानूनी प्रक्रिया के तहत गिरफ्तारी की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर शंकराचार्य का पक्ष है कि वे न्यायिक प्रक्रिया का पूरा सम्मान करेंगे। आने वाले दिनों में यह मामला और स्पष्ट होगा। इस पूरे घटनाक्रम के बीच एक बड़ा सवाल समाज के सामने खड़ा है। जब आरोप किसी सामान्य व्यक्ति पर लगते हैं तो मामला केवल कानून तक सीमित रहता है, लेकिन जब आरोप किसी धार्मिक पद से जुड़े व्यक्ति पर लगते हैं तो लोगों की भावनाएं भी उससे जुड़ जाती हैं।यही वजह है कि ऐसे मामलों में सत्य का सामने आना और भी जरूरी हो जाता है। क्योंकि न्याय केवल अदालत के लिए नहीं, समाज के विश्वास के लिए भी जरूरी होता है। अभी जांच जारी है। सवाल भी जारी हैं और इंतजार भी उस सच का, जो इस पूरे विवाद के पीछे छिपा है।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 23 फरवरी 2026 , विक्रम संवत 2080

राजनीति में जाति की वापसी

ये होता है माहौल!! जाति समाज की हकीकत है। इस सच के बावजूद एक डेढ़ दशक पहले वातावरण ऐसा था कि लोग जातिगत पहचानों से बचने लगे थे। कम से कम शहरों में। भले अंदर से कोई कितना भी जातिवादी हो लेकिन एक आमफहम सोच बनी कि हमें जातिवादी दिखना नहीं चाहिए। दिखने से बचने के सिलसिले में बहुतों ने माना कि सिर्फ दिखना काफी नहीं, होना भी नहीं चाहिए। ये रेस की तरह अतार्किक है कि हम किसी के गुण दोष उसकी जातीय पहचान से तय करें। ना जाति काम तय कर सकती है, ना किसी का ऊंचा नीचा होना.. लेकिन फिर क्या हुआ?? जाति के नाम पर वोटर से लेकर टिकट बांटने वाली पार्टियों के सीएम से लेकर पीएम दावेदार अपनी जाति खुलकर बताने लगे। वो भले इसे पीड़ित मोड में लपेट कर बोल रहे थे लेकिन उद्देश्य सियासी फायदा था। विड़ंबना देखिए कि फिर ये उम्मीद नाइन टू फाइव में मसरूफ नागरिकों से की जा रही है कि वो यूनिवर्सिटी में समानता समितियों की अहमियत समझें, देश से जाति विभेद समाप्त करें, चुनाव में जाति पांति से अप्रभावित रहकर वोट करें। ये सिर्फ यहीं मुमकिन है कि बबूल बोकर आम होने की उम्मीद की जाए। लोग भी समझदार हैं। नेताओं को देखकर सीख रहे हैं। उन्हें पता है कि कब जाति का नाम लेकर फायदा उठाना है और कब कौन सा अभिवादन करके गोलबंदी करनी है। अब उन्हें जाति और धर्म का इस्तेमाल करने से हतोत्साहित करनेवाला कोई नहीं है। जब किसी दीपक को इसलिए मुकदमे, धमकी और आर्थिक बहिष्कार झेलने पड़ जाएं क्योंकि वो एक निर्दोष गैर हिंदू पर दबाव बनानेवालों के सामने खड़ा है तो इस सोसायटी का सामूहिक विवेक चेक करने की भी ज़रूरत नहीं बची। एक बैंक में झगड़े के दौरान दोनों तरफ से जाति पूछी बताई जा रही हैं और सोशल मीडिया पर उसी आधार पर मोर्चे बंध गए तो ये बताने की ज़रूरत नहीं कि झगड़ों में सही गलत की समझ मर चुकी.. अब जीत-हार जाति की ताकतें तय करेंगी। ये होना था ही। सिर्फ अंग्रेज़ी लिखने बोलने को शिक्षा समझने वालों के साथ और क्या होता! क्रिंज और एवरेज सेलिब्रेट करनेवाले वोटर भी हैं इसकी किसे चिंता है? ना ये चिंता संसद में सुनाई देती है और ना मन की बात में। किसी नेता को फिक्र नहीं कि नागरिकों के बोध को कैसे बढ़ाया जाए। जब एक दल बदलू को गद्दार कहे जाने पर उसे धर्म का अपमान बताया जाने लगे तब आप दूर से ही समझ लें कि नेता खुद कितना बारीक है। इलीट क्लास की मौज आ चुकी है। उसे सिर्फ सार्वजिनक जीवन में बेवकूफ एक्ट करना है। अकेले में हम लोगों पर हंसना है। यही नियति है। कम से कम आधी सदी का ब्लू प्रिंट तैयार है। शेष का वो बताएंगे जो इस पागलपन के बाद कुछ कहे जाने को बचे रहेंगे।

नितिन

समाज में संवाद और संवेदनशीलता की जरूरत

@ अनुराग पाठक

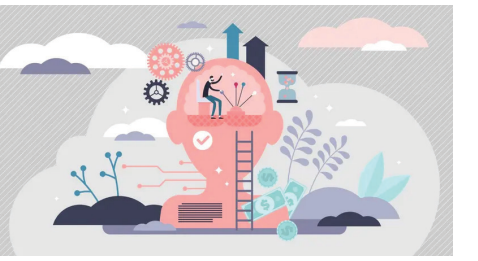

हाल ही में राहुल गांधी और उत्तराखंड के कोटद्वार निवासी मोहम्मद दीपक की नई दिल्ली में हुई मुलाकात ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा किया है कि आज के समय में समाज को किस दिशा में संवाद की आवश्यकता है। एक छोटे शहर से उठे विवाद से शुरू हुई चर्चा राष्ट्रीय स्तर तक पहुंची और अंततः यह मुलाकात केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक संदेश का रूप लेती दिखाई दी।

उत्तराखंड के कोटद्वार में पटेल मार्ग पर स्थित एक कपड़े की दुकान के नाम को लेकर विवाद सामने आया था। यह विवाद धीरे-धीरे स्थानीय दायरे से निकलकर सोशल मीडिया और राजनीतिक चर्चा का हिस्सा बन गया। जब इस मुद्दे पर राहुल गांधी ने प्रतिक्रिया दी, तो मामला और व्यापक हो गया। इसके बाद कोटद्वार के मोहम्मद दीपक राष्ट्रीय चर्चा में आ गए।नई दिल्ली में राहुल गांधी के आवास पर हुई मुलाकात में वैभव वालिया भी मौजूद रहे, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संचार विभाग से जुड़े हैं। इस मुलाकात को कांग्रेस नेताओं ने मानवता, करुणा और सामाजिक सद्भाव का प्रतीक बताया। बताया गया कि दीपक कुमार अपने सामाजिक व्यवहार और मानवीय दृष्टिकोण के कारण स्थानीय स्तर पर पहले से ही चर्चा में रहे हैं।

राजनीतिक दृष्टि से देखें तो यह मुलाकात एक संदेश देने का प्रयास भी मानी जा रही है। भारतीय राजनीति में प्रतीकों की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है। कभी किसी किसान से मुलाकात, कभी किसी मजदूर के घर भोजन, तो कभी किसी छोटे शहर के व्यक्ति को सम्मान देना, ये सभी कदम राजनीति के सामाजिक पक्ष को मजबूत करने का प्रयास होते हैं।

लेकिन इस घटना का एक दूसरा पहलू भी है, जो अधिक गंभीर है। पिछले कुछ वर्षों में छोटे-छोटे स्थानीय मुद्दे तेजी से राष्ट्रीय बहस में बदल जाते हैं। सोशल मीडिया के दौर में किसी भी विवाद का स्वरूप बहुत जल्दी व्यापक हो जाता है। ऐसे में जिम्मेदारी केवल राजनीतिक दलों की ही नहीं, बल्कि समाज की भी है कि वह तथ्यों और संवेदनशीलता के साथ प्रतिक्रिया दे।कोटद्वार का यह मामला भी मूल रूप से स्थानीय था, लेकिन जिस तरह यह राष्ट्रीय चर्चा बना, उससे यह स्पष्ट होता है कि आज समाज भावनात्मक मुद्दों के प्रति अधिक संवेदनशील हो चुका है। यह संवेदनशीलता सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि संवाद किस दिशा में जाता है।

राहुल गांधी की यह मुलाकात राजनीतिक संदेश के साथ-साथ सामाजिक संकेत भी देती है कि सार्वजनिक जीवन में संवाद का महत्व कम नहीं हुआ है। राजनीति केवल नीतियों और चुनावों तक सीमित नहीं होती, बल्कि समाज के मनोविज्ञान से भी जुड़ी होती है। जब कोई बड़ा नेता किसी सामान्य नागरिक से मिलता है, तो उसका प्रभाव प्रतीकात्मक रूप से व्यापक होता है।

हालांकि यह भी उतना ही जरूरी है कि ऐसे मामलों को राजनीतिक ध्रुवीकरण का माध्यम न बनने दिया जाए। सामाजिक सद्भाव केवल बयान या मुलाकातों से नहीं बनता, बल्कि निरंतर संवाद, विश्वास और संतुलित दृष्टिकोण से बनता है।यह भी ध्यान देने वाली बात है कि आज देश के छोटे शहरों और कस्बों से जुड़ी घटनाएं राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बन रही हैं। यह लोकतंत्र के विस्तार का संकेत है, लेकिन इसके साथ जिम्मेदारी भी बढ़ती है। हर मुद्दे को संवेदनशीलता और तथ्यों के साथ समझना आवश्यक है।

मोहम्मद दीपक और राहुल गांधी की यह मुलाकात इसी व्यापक संदर्भ में देखी जानी चाहिए। यह घटना हमें याद दिलाती है कि समाज में पहचान से अधिक महत्वपूर्ण इंसानियत है और विवाद से अधिक महत्वपूर्ण संवाद।राजनीति जब समाज को जोड़ने का माध्यम बनती है, तभी उसका वास्तविक अर्थ सामने आता है। आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इस तरह की घटनाएं केवल प्रतीक बनकर रह जाती हैं या सामाजिक विश्वास को मजबूत करने का वास्तविक आधार बनती हैं।

जुबानी तीर

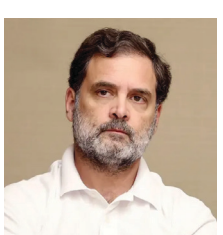

देश की असली ताकत नफरत में नहीं, बल्कि इंसानियत और आपसी विश्वास में है, जो लोग सामाजिक दबाव के बावजूद सही बात के साथ खड़े होते हैं वे समाज को दिशा देते हैं, मोहम्मद दीपक जैसे युवाओं का साहस बताता है कि भारत की आत्मा अभी भी करुणा और भाईचारे से जीवित है।

राहुल गांधी (लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष)

उत्तराखंड शांति और सामाजिक सौहार्द की भूमि है, यहां किसी भी तरह के विवाद या तनाव को बढ़ावा देने की अनुमति नहीं दी जाएगी, कोटद्वार से जुड़े मामले में प्रशासन को निष्पक्ष जांच के निर्देश दिए गए हैं और कानून से ऊपर कोई नहीं है, सरकार हर नागरिक की सुरक्षा और सम्मान के लिए प्रतिबद्ध है।

पुष्कर सिंह धामी (उत्तराखंड के मुख्यमंत्री)

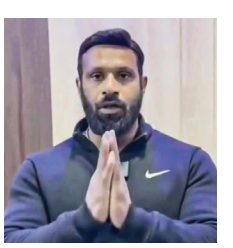

मैंने जो किया वह किसी राजनीति के लिए नहीं बल्कि इंसानियत के लिए किया, विवाद के बाद मुझे कई तरह के दबावों का सामना करना पड़ा लेकिन समाज के कई लोगों का समर्थन भी मिला, राहुल गांधी से मुलाकात के बाद मेरा मनोबल और मजबूत हुआ है और मुझे भरोसा है कि सच और सद्भाव की जीत होगी।

मोहम्मद दीपक (कोटद्वार के निवासी)

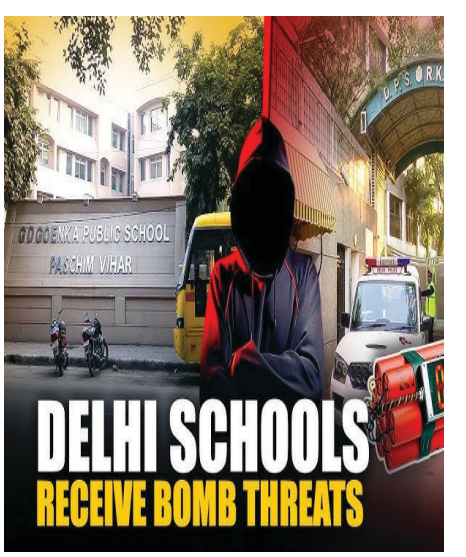

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित । संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

घुटनों के दर्द का आयुर्वेदिक इलाज

कारण, उपचार और बचाव के सरल उपाय

आज के समय में घुटनों का दर्द केवल बुजुर्गों की समस्या नहीं रह गया है, बल्कि युवा वर्ग भी तेजी से इससे प्रभावित हो रहा है। लंबे समय तक बैठकर काम करना, मोटापा, गलत खानपान, व्यायाम की कमी और बढ़ती उम्र के साथ जोड़ों का घिसना इसके प्रमुख कारण बनते जा रहे हैं। आयुर्वेद में घुटनों के दर्द को मुख्य रूप से "संधिवात" कहा गया है और इसका उपचार शरीर के संतुलन को ठीक करके किया जाता है।

आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में जोड़ों के दर्द को वात दोष से जुड़ा बताया गया है। आयुर्वेद के महान आचार्य चरक ने लिखा है कि जब शरीर में वात बढ़ जाता है तो जोड़ों में सूखापन, दर्द और जकड़न की समस्या उत्पन्न होती है।

घुटनों के दर्द के मुख्य कारण

घुटनों का दर्द कई कारणों से हो सकता है। बढ़ती उम्र के साथ जोड़ों के बीच का कार्टिलेज घिसने लगता है, जिससे हड्डियां आपस में रगड़ खाने लगती हैं। मोटापा भी एक बड़ा कारण है क्योंकि शरीर का अतिरिक्त वजन घुटनों पर अधिक दबाव डालता है।

इसके अलावा कैल्शियम और विटामिन डी की कमी, पुराने चोट, गठिया, लंबे समय तक खड़े रहना या एक ही स्थिति में बैठकर काम करना भी घुटनों के दर्द को बढ़ा सकता है। आज के डिजिटल जीवन में शारीरिक गतिविधि कम होने से यह समस्या तेजी से बढ़ रही है।

आयुर्वेद में घुटनों के दर्द को कैसे समझा जाता है

आयुर्वेद के अनुसार शरीर तीन दोषों वात, पित्त और कफ से मिलकर बना है। घुटनों का दर्द मुख्य रूप से वात दोष के असंतुलन से होता है। जब शरीर में वात बढ़ता है तो जोड़ों में सूखापन, खिंचाव और दर्द महसूस होता है।

आयुर्वेद का उपचार केवल दर्द कम करने पर नहीं, बल्कि शरीर के दोषों को संतुलित करने पर आधारित होता है। इसलिए आयुर्वेदिक इलाज धीरे-धीरे असर करता है लेकिन लंबे समय तक लाभ देता है।

घुटनों के दर्द के आयुर्वेदिक घरेलू उपाय

1. मेथी का उपयोग

मेथी घुटनों के दर्द के लिए बहुत लाभकारी मानी जाती है। रात में एक चम्मच मेथी दाना पानी में भिगो दें और सुबह खाली पेट चबा कर खाएं। यह जोड़ों की सूजन कम करने में मदद करती है।

2. हल्दी और दूध

हल्दी प्राकृतिक दर्दनाशक मानी जाती है। एक गिलास गर्म दूध में आधा चम्मच हल्दी मिलाकर पीने से सूजन कम होती है और जोड़ों को मजबूती मिलती है।

3. अदरक का सेवन

अदरक में सूजन कम करने वाले तत्व होते हैं। अदरक की चाय पीने से दर्द और जकड़न में राहत मिलती है।

4. लहसुन का उपयोग

लहसुन वात को संतुलित करने में मदद करता है। सुबह खाली पेट लहसुन की दो कली खाने से जोड़ों को मजबूती मिलती है।

तेल मालिश से मिलता है विशेष लाभ

आयुर्वेद में अभ्यंग यानी तेल मालिश को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। घुटनों के दर्द में सरसों का तेल, तिल का तेल या महा नारायण तेल से हल्की मालिश करने से रक्त संचार बेहतर होता है और दर्द कम होता है।

हल्का गुनगुना तेल लगाकर रोज 10 मिनट मालिश करने से जोड़ों में लचीलापन बढ़ता है। इसके बाद हल्की सिकाई करने से और अधिक फायदा मिलता है।

पंचकर्म उपचार

अगर घुटनों का दर्द पुराना हो जाए तो आयुर्वेद में पंचकर्म उपचार की सलाह दी जाती है। इसमें विशेष रूप से तीन प्रक्रियाएं प्रभावी मानी जाती हैं।

1. बस्ती उपचार

यह वात रोगों के लिए सबसे प्रभावी माना जाता है। इसमें औषधीय तेल या काढ़े का उपयोग किया जाता है।

2. जानु बस्ती

इस उपचार में घुटनों पर आटे का घेरा बनाकर उसमें गर्म औषधीय तेल डाला जाता है। इससे जोड़ों को पोषण मिलता है।

3. स्वेदन (भाप उपचार)

इससे जोड़ों की जकड़न कम होती है और दर्द में राहत मिलती है।

खानपान का विशेष महत्व

घुटनों के दर्द में खानपान का बहुत बड़ा योगदान होता है। आयुर्वेद के अनुसार वात को बढ़ाने वाले भोजन से बचना चाहिए।

ठंडी चीजें, ज्यादा तली हुई चीजें और पैकेट वाला भोजन कम करना चाहिए। इसके स्थान पर गर्म और ताजा भोजन लेना चाहिए।

हरी सब्जियां, दूध, घी, तिल, बादाम और मूंग दाल जैसे भोजन जोड़ों के लिए लाभकारी होते हैं।

गुनगुना पानी पीने से भी शरीर में जमा विषैले तत्व बाहर निकलते हैं।

वजन नियंत्रित रखना जरूरी

घुटनों के दर्द का एक बड़ा कारण बढ़ता वजन है। शरीर का वजन जितना अधिक होगा, घुटनों पर दबाव उतना ही बढ़ेगा। इसलिए नियमित व्यायाम और संतुलित भोजन के माध्यम से वजन नियंत्रित रखना जरूरी है।

योग से घुटनों को मिलती है मजबूती

योग घुटनों के दर्द में बहुत लाभकारी है। कुछ आसान योगासन नियमित करने से जोड़ों में लचीलापन बढ़ता है।

ताड़ासन
त्रिकोणासन
भुजंगासन
पवनमुक्तासन

ध्यान रखना चाहिए कि तेज दर्द होने पर योग विशेषज्ञ की सलाह से ही अभ्यास करें।

किन बातों का रखें ध्यान

लंबे समय तक एक ही जगह बैठकर काम न करें
अचानक भारी वजन न उठाएं
सीढ़ियां चढ़ते समय सावधानी रखें
कठोर जमीन पर ज्यादा देर न बैठें
रोज हल्की एक्सरसाइज करें
कब डॉक्टर से संपर्क करें

यदि घुटनों में लगातार सूजन, चलने में कठिनाई या तेज दर्द हो तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए। कई बार यह गठिया या अन्य गंभीर बीमारी का संकेत भी हो सकता है।

आयुर्वेद का मूल सिद्धांत

आयुर्वेद का उद्देश्य केवल बीमारी को ठीक करना नहीं, बल्कि शरीर को संतुलित रखना है। नियमित दिनचर्या, सही खानपान और प्राकृतिक उपचार अपनाकर घुटनों के दर्द से काफी हद तक बचा जा सकता है।

आज जरूरत है कि हम आधुनिक जीवनशैली के साथ-साथ पारंपरिक ज्ञान को भी अपनाएं। आयुर्वेद हमें यही सिखाता है कि प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलेंगे तो शरीर स्वस्थ रहेगा।

घुटनों का दर्द धीरे-धीरे बढ़ने वाली समस्या है, लेकिन समय रहते ध्यान दिया जाए तो इसे नियंत्रित किया जा सकता है। सही आहार, नियमित योग, आयुर्वेदिक उपचार और सकारात्मक जीवनशैली अपनाकर बिना दुष्प्रभाव के लंबे समय तक स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है।

महात्मा श्रीचंद्र जी: दिव्य विरागी और भक्ति के प्रकाशक

महात्मा श्रीचंद्र जी का प्राकट्य और ऐतिहासिक संदर्भ

परम उदासी और असाधारण विरागी महात्मा श्रीचंद्र जी भगवान के विलक्षण अनुरागी थे। उन्होंने आचार्य शंकर की तरह भारतीय संस्कृति और अध्यात्म ज्ञान का संरक्षण किया। जीवमात्र को भवसागर से पार उतारने के लिए उन्होंने सुगम और आचारमूलक भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। वे ऐतिहासिक दिव्य पुरुष थे, जिन्होंने धर्म की मर्यादा को सुरक्षित रखा। जन्मजात योगी के रूप में उन्होंने ज्ञानयोग की साधना की। उनके प्राकट्य के समय भारत की राजनीतिक स्थिति बेहद अस्थिर और अशांत थी। हर दिन दिल्ली में नए-नए राज्य की स्थापना की आशंका बनी रहती थी। चारों ओर राजनीतिक षड्यंत्र और धर्म संबंधी उत्पात का बोलबाला था। उस वक्त मेवाड़ का राजतंत्र विदेशी सत्ता को दिल्ली से बाहर निकालकर स्वतंत्रता की ज्योति फैलाने के लिए पूरा प्रयास कर रहा था। दिल्ली में लोदी शासन शिथिल हो चला था। बाबर भारत की ओर बढ़ने और राज करने के सपने देख रहा था। इस राजनीतिक अशांति के साथ-साथ धर्म क्षेत्र में शासन का हस्तक्षेप हो रहा था। वैष्णव और शैव का संघर्ष दिन-प्रतिदिन उग्र रूप धारण कर रहा था। कहीं-कहीं वाम मार्ग की साधना प्रबल थी। निस्संदेह, यदि ऐसे कठिन और अशांत समय में महात्मा श्रीचंद्र जी का प्राकट्य न हुआ होता, तो देश की धार्मिक स्थिति अत्यंत विचित्र हो जाती और चारों ओर अशांति का साम्राज्य छा जाता। विकराल युद्ध वातावरण में उन्होंने धर्माचरण का शंखनाद किया और भारतीय संस्कृति की रक्षा की। यह उनकी मौलिकता थी। उदासीन संप्रदाय के मध्यकालीन आचार्य के रूप में वे स्वीकार किए जाते हैं। उन्होंने भारतीय जीवन को वैदिक मर्यादा से संपन्न कर सनातन धर्म का गौरव बढ़ाया। धार्मिक समन्वय के मध्यकालीन सूत्रधारों में से एक थे वे। उनका जीवन दिव्य प्रकाश की तरह था, जो अंधकार को मिटाता चला गया। भक्ति की धारा में डूबे हुए, उन्होंने आत्मा की शुद्धि और परमात्मा से मिलन का मार्ग दिखाया। उनके चरणों में समर्पित होकर जीव प्रभु की कृपा प्राप्त करते थे।

जन्म और परिवार की दिव्यता

महात्मा श्रीचंद्र जी संत नानक के पुत्र थे। उनका जन्म संवत 1551 विक्रमी में भाद्रपद शुक्ल नवमी को तलवंडी ग्राम में हुआ। उन्होंने इतिहास प्रसिद्ध परम पवित्र कुल को धन्य किया। उनकी माता मुलक्षणी या सुलक्खनी देवी थीं। उस समय संत नानक 32 साल के थे। श्रीचंद्र जी के जन्म के समय नानक घर के बाहर बैठक में सत्संग कर रहे थे। उनकी बहन नानकी ने सूचना दी कि अमित तेजस्वी बालक ने जन्म लिया है। पहले तो उनकी मां ने जटा भस्मादि से अलंकृत शिवरूप में उन्हें देखा, लेकिन प्रार्थना करने पर वे साधारण शिशु हो गए। संत नानक दिव्य शिशु के जन्म से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तत्क्षण समझ लिया कि चंद्रमा की तरह विश्व का अज्ञान अंधकार मिटाने के लिए किसी दैवी आत्मा ने उन पर कृपा की है। इसलिए उन्होंने उनका नाम श्रीचंद्र रखा। यह जन्म दिव्य घटना थी, जो भक्ति की ज्योति फैलाने वाली थी। परमात्मा की लीला में उनका अवतरण हुआ, जो संसार को उदासीनता और विराग की शिक्षा देता। उनके जन्म से घर में आध्यात्मिक आनंद छा गया, जैसे प्रभु स्वयं अवतरित हुए हों। चार साल बाद नानक दूसरे पुत्र लक्ष्मीचंद्र के जन्म के बाद सन्यासी वेश में घर से बाहर निकल गए। श्रीचंद्र जी पिता के वैराग्य संस्कार से बचपन से ही प्रभावित होने लगे। वे अन्य लड़कों से बहुत कम मिलते थे। दूर से ही निलिप्त भाव से उनके खेल देखा करते थे। एकांत स्थान में उनका मन बहुत लगता था। घर में लोगों को विश्वास हो गया था कि श्रीचंद्र जी भी पिता की तरह सन्यास ले लेंगे, इसलिए लोग उनके प्रति विशेष सावधान रहने लगे। उनका जीवन शुरू से ही दिव्यता से भरा था, जहां हर पल प्रभु स्मरण में बीतता। भक्ति की गहराई उनके बाल मन में समाई हुई थी।

बाल्यकाल की चमत्कारिक घटनाएं

एक दिन विचित्र घटना हुई। श्रीचंद्र जी हाथ में थोड़े से चने लेकर भिक्षुक को देने घर से बाहर आए। भिक्षु के पात्र में चने के स्थान पर मोती देखकर घर वाले तथा अन्य लोग आश्चर्यचकित हो गए। श्रीचंद्र जी का अधिक समय एकांत में बीतता था। वे लोगों से सुनते थे कि पिता नानक बचपन में इधर-उधर वन में घूमा करते थे। वे अपने गांव से थोड़ी दूर पर एक वन में चले गए। दोपहर तक घर न लौटने पर लोग आशंकित हुए। खोज आरंभ हो गई। वन में प्रवेश करने पर लोगों ने श्रीचंद्र जी को एक पेड़ के नीचे बैठा पाया। उस वन में एक भयानक सिंह रहता था। लोगों ने देखा कि सिंह श्रीचंद्र जी के सामने शांत भाव में बैठा है और वे समाधिस्थ हैं। एक काला नाग उनके गले में लिपटा हुआ है। तलवंडी के शासक रायबुलार घटनास्थल पर उपस्थित थे। श्रीचंद्र जी के दर्शन से वे प्रभावित हुए। दूर-दूर से लोग श्रीचंद्र जी का दर्शन करने के लिए आने लगे। यह चमत्कार प्रभु की कृपा का प्रमाण था, जो उनके दिव्य स्वरूप को प्रकट करता। कुछ दिनों के लिए श्रीचंद्र जी अपने नाना के घर चले आए। उनके छोटे भाई लक्ष्मीचंद्र भी साथ थे। एक दिन वे वन में गए, रात को दोनों भाई वन में ही रह गए। उनकी माता सुलक्षणी आदि की चिंता बढ़ने लगी। उनके न लौटने पर लोग खोज में निकल पड़े। सौभाग्य से प्रसिद्ध उदासीन महात्मा अविनाशी मुनि का उनको दर्शन हुआ। मुनि ने सांत्वना दी कि बालक शीघ्र ही घर आ जाएंगे। मुनि के आशीर्वाद से वे घर आ गए। इन समय श्रीचंद्र जी 8 साल के थे। वे अपने भाई के साथ अपने घर तलवंडी चले आए। ननिहाल में 3 साल तक रहने के बाद वे 11 साल की अवस्था में घर आए थे। इन घटनाओं से उनके जीवन में विराग और भक्ति की नींव मजबूत हुई, जो परमात्मा की ओर ले जाती। हर चमत्कार में प्रभु की लीला झलकती, जो जीवों को आध्यात्मिक पथ पर प्रेरित करती।

शिक्षा और वैराग्य का उदय

यथासमय उपनयन संस्कार संपन्न होने पर विवाह की बात चलने लगी। लेकिन वे तो जन्मजात सन्यासी थे, इसलिए विवाह की बात आगे न बढ़ सकी। श्रीचंद्र जी विद्याध्ययन के लिए कश्मीर गए। वहां वे समस्त शास्त्रों में निष्णात हो गए। लोग उनकी कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुए। 14 साल की ही अवस्था में उन्होंने सारे शास्त्र पढ़ डाले। काशी के दिग्विजयी पंडित सोमनाथ को शास्त्रार्थ में गहरी पराजय दी। धीरे-धीरे उनमें वैराग्य का भाव प्रबल होने लगा। घर और परिवार के प्रति आसक्ति तो थी ही नहीं, इसलिए मन में निर्मल वैराग्य का उदय हुआ। यह वैराग्य प्रभु भक्ति की पराकाष्ठा था, जहां संसार की माया से मुक्त होकर आत्मा परमात्मा में लीन होती। उनकी शिक्षा दिव्य ज्ञान की प्राप्ति थी, जो वेदों और शास्त्रों से आध्यात्मिक प्रकाश फैलाती। अविनाशी मुनि से उन्होंने दीक्षा ली। वे उस समय अमरनाथ की यात्रा के लिए जा रहे थे। दीक्षित होने के बाद ही गुरु के आदेश से धर्म प्रचार के लिए उन्होंने भारतखंड के प्रसिद्ध तीर्थों और धर्म क्षेत्रों की यात्रा की। वे व्रज, काशी और प्रयाग भी गए थे। जगन्नाथपुरी में उन्होंने दिग्विजयी पंडित सोमनाथ त्रिपाठी को शिष्य रूप में स्वीकार कर उनका नाम सोमदेव रखा। वे करतारपुर भी गए थे। गांव के बाहर ही उन्होंने आश्रम लगाया। उनके पिता संत नानक उस समय करतारपुर में ही थे। नानक ने उन्हें सन्यासी और महात्मा के रूप में देखकर परम आनंद का अनुभव किया। वे करतारपुर से कश्मीर चले आए। इस प्रकार उन्होंने देश में धार्मिक और आध्यात्मिक संगठन सुदृढ़ किया। उनकी यात्राएं भक्ति की ज्योति फैलाने वाली थीं, जहां हर कदम पर प्रभु स्मरण होता।

धार्मिक प्रचार और योगदान

कश्मीर में महात्मा श्रीचंद्र जी ने 7 साल तक निवास कर श्रीमद्भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र आदि पर विद्वत्ता पूर्ण भाष्य लिखे। उन्होंने चारों वेदों पर विस्तार से भाष्य लिखे, पर वे अप्राप्य हैं। उन्होंने पेशावर में भी धर्म प्रचार किया। काबुल गए। लोग उनके योगिक चमत्कारों से आकृष्ट होकर उनके दर्शन के लिए आने लगे। वजीरखान नामक एक मुसलमान उनकी सीख से प्रभावित होकर 'रामकृष्ण' का नाम लेकर करताल बजाते-बजाते काबुल आए। बारठ से श्रीनगर जाने पर उन्होंने अपने अनुयायियों को मात्रा शास्त्र का ज्ञान दिया। उदासीन पंथ में मात्रा शास्त्र के वचन वेद मंत्र के समान पवित्र और महत्वपूर्ण स्वीकार किए जाते हैं। मात्रा शास्त्र आत्मज्ञान का साहित्य है। आचार्य श्रीचंद्र बारठ होते हुए चंबा की ओर चल पड़े। भगवती रावी के तट पर चंबा के रमणीय प्रांत में वे एकांत साधना करने लगे। संवत 1700 विक्रमी की बात है। एक दिन प्रभात होने के पहले ही वे रावी के पार हो गए और पर्वतीय वन प्रदेश में सदा के लिए अंतर्धान हो गए। उनका प्रचार कार्य दिव्य था, जो समाज में सत्य, प्रेम और शांति स्थापित करता। उन्होंने दिव्य आत्मज्ञान की ज्योति फैलाई, समाज की आंतरिक चेतना जगाई। पृथ्वी पर सत्य, प्रेम और शांति का साम्राज्य स्थापित किया। श्रीचंद्र जी अनुपम विभूति थे। उनका सम्पूर्ण जीवन ज्ञान, भक्ति और कर्म का दार्शनिक समन्वय था। उदासीनता की मिसाल थे वे, जहां हर क्रिया प्रभु आराधना बन जाती।

रचनाएं और आध्यात्मिक विरासत

महात्मा श्रीचंद्र जी ने वेद, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता पर भाष्य लिखे। 'मात्रा शास्त्र' उनकी प्रसिद्ध कृति है। ये रचनाएं आत्मज्ञान और भक्ति की गहराई को प्रकट करतीं, जो उदासीन पंथ की नींव हैं। मात्रा शास्त्र में वचन वेद मंत्रों जैसे पवित्र हैं, जो जीव को परमात्मा की ओर ले जाते। उनके भाष्य विद्वत्ता के प्रतीक हैं, जो शास्त्रों की व्याख्या में दिव्य प्रकाश डालते। चारों वेदों पर विस्तार से लिखे भाष्य, भले अप्राप्य हों, लेकिन उनकी गहराई आध्यात्मिक जगत में महसूस होती। ये रचनाएं भक्ति की अमृत वर्षा हैं, जो विरागी मन को प्रभु से जोड़तीं।

समापन: दिव्य जीवन की पूर्णता

महात्मा श्रीचंद्र जी का जीवन परमात्मा की लीला था, जहां वैराग्य, भक्ति और ज्ञान का संगम हुआ। उन्होंने संसार को उदासीनता सिखाई, जो माया से मुक्ति का मार्ग है। उनका अंतर्धान रावी तट पर हुआ, लेकिन उनकी ज्योति आज भी चमकती है। वे सनातन धर्म के रक्षक थे, जिनकी कृपा से जीव भवसागर पार करते। उनका योगदान अमर है, जो आध्यात्मिक जगत में प्रेरणा स्रोत बना। प्रभु भक्ति में लीन, उन्होंने दुनिया को शांति का संदेश दिया।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

नेपाल के धादिंग में बड़ा सड़क हादसा

त्रिशूली नदी में गिरी बस, 18 की मौत, 25 घायल

@ अभिषेक चौबे

सोमवार देर रात का समय था। नेपाल के पहाड़ी रास्तों पर सन्नाटा पसरा हुआ था। दूर-दूर तक सिर्फ हेडलाइट्स की रोशनी और पहाड़ों के बीच बहती नदियों की आवाज सुनाई दे रही थी। पोखरा से काठमांडू की ओर जा रही एक बस में बैठे 44 लोग अपने-अपने सपनों के साथ सफर कर रहे थे। किसी को घर पहुंचना था, कोई काम के सिलसिले में जा रहा था, तो कोई अपने परिवार से मिलने की उम्मीद में रास्ता तय कर रहा था।लेकिन रात करीब डेढ़ बजे, धादिंग जिला के बेनिघाट रोरांग इलाके में अचानक सब कुछ बदल गया।एक पल की चूक, और पूरी बस सीधे गहरी घाटी में बहती त्रिशूली नदी में जा गिरी।

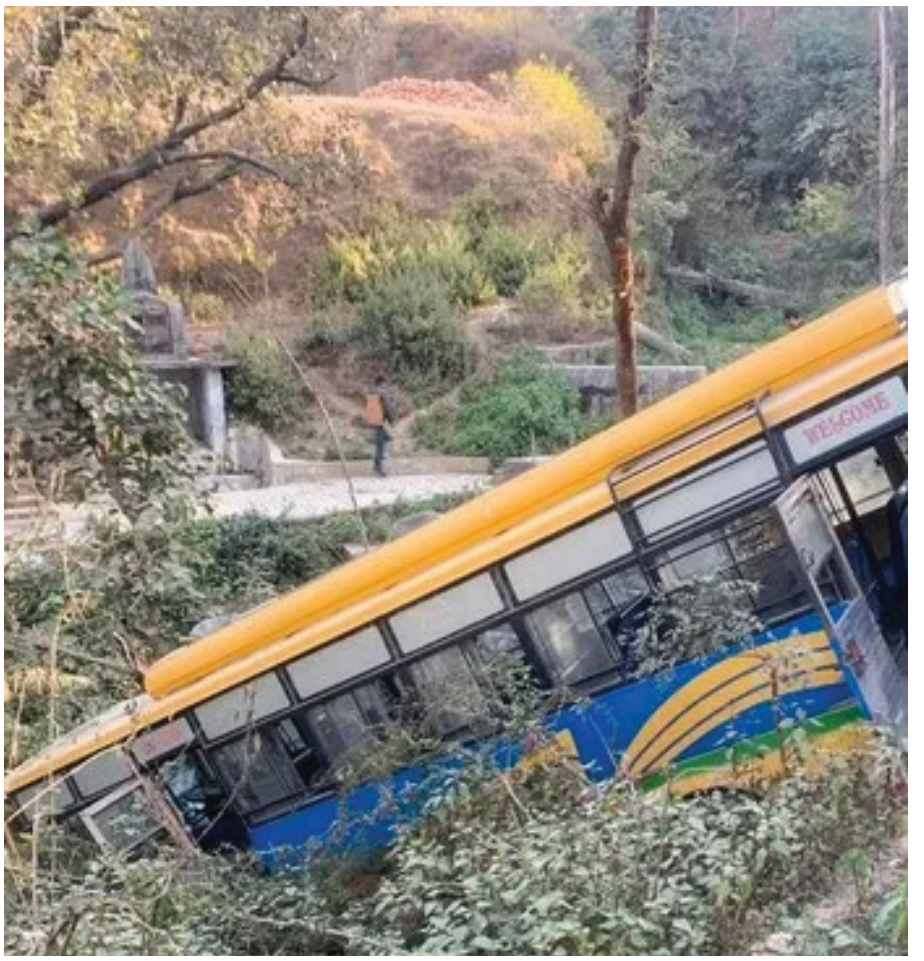

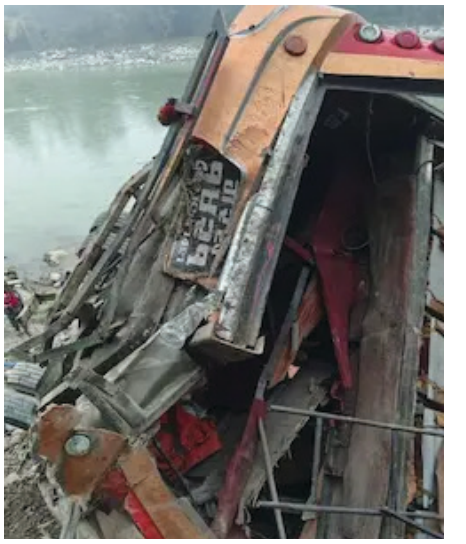

चीखों से टूट गई रात की खामोशी

बस का नंबर Ga 1 Kha 1421 था। रास्ता पहाड़ी था, मोड़ तीखे थे और रात गहरी। स्थानीय लोगों के अनुसार अचानक तेज आवाज आई, जैसे कोई भारी चीज चट्टानों से टकराई हो। कुछ ही सेकंड में चीखें सुनाई देने लगीं।जब गांव के लोग टॉर्च लेकर बाहर निकले तो देखा कि बस नदी में गिर चुकी थी।ठंडी हवा, तेज बहाव और अंधेरे ने हालात और भयावह बना दिए।कई यात्री बस के अंदर फंसे थे। कुछ पानी के बहाव में बह गए। कुछ लोग घायल हालत में मदद के लिए पुकार रहे थे।

बचाव अभियान: समय से लड़ाई

दुर्घटना आधी रात को हुई, इसलिए राहत कार्य शुरू करने में कठिनाई आई। लेकिन स्थानीय लोग सबसे पहले मौके पर पहुंचे। उन्होंने रस्सियों और टॉर्च की मदद से नदी किनारे उतरकर घायलों को निकालना शुरू किया।कुछ देर बाद आर्म्ड पुलिस फोर्स और स्थानीय प्रशासन की टीमें भी पहुंचीं।तेज बहाव के बीच रेस्क्यू करना आसान नहीं था।हर मिनट कीमती था।अब तक 18 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है, जबकि 25 से ज्यादा लोग घायल हैं। कई घायलों को गंभीर हालत में काठमांडू रेफर किया गया है।मृतकों में एक पुरुष और एक महिला विदेशी नागरिक भी शामिल बताए जा रहे हैं, हालांकि उनकी पहचान अभी तक सार्वजनिक नहीं की गई है।

यात्रियों की अधूरी कहानियां

हर हादसे की तरह यह दुर्घटना भी सिर्फ आंकड़ा नहीं है। इसके पीछे अधूरी कहानियां हैं।एक युवक अपनी नौकरी के इंटरव्यू के लिए काठमांडू जा रहा था।एक बुजुर्ग महिला अपने बेटे से मिलने जा रही थी।दो छात्र परीक्षा देने के लिए सफर कर रहे थे।और कुछ लोग सिर्फ घर लौट रहे थे।अब इन यात्राओं का कोई अंत नहीं बचा।प्रारंभिक जानकारी के अनुसार बस ड्राइवर का नियंत्रण अचानक वाहन से हट गया। पहाड़ी रास्तों पर हल्की सी चूक भी जानलेवा हो सकती है।

पुलिस कई संभावित कारणों की जांच कर रही है। रात में ड्राइविंग और कम दृश्यता,तेज मोड़ पर संतुलन बिगड़ना,चालक की थकान,तकनीकी खराबी।हालांकि अभी अंतिम कारण स्पष्ट नहीं हुआ है।

नेपाल में सड़क हादसे क्यों आम हैं? नेपाल का भौगोलिक ढांचा बेहद चुनौतीपूर्ण है। पहाड़, गहरी घाटियां और संकरे रास्ते यहां यात्रा को जोखिम भरा बना देते हैं।विशेषज्ञों के अनुसार तीन बड़े कारण अक्सर सामने आते हैं। संकरी और घुमावदार सड़कें,पुराने वाहन,ओवरलोडिंग और तेज रफ्तार। पहाड़ी इलाकों में थोड़ी सी लापरवाही भी बड़े हादसे में बदल जाती है।

इससे पहले भी हो चुके हैं कई हादसे

यह पहली बार नहीं है जब त्रिशूली नदी ने ऐसी त्रासदी देखी हो।5 फरवरी को नेपाल के बैतड़ी जिले में बारातियों से भरी बस 150 मीटर गहरी खाई में गिर गई थी। उस हादसे में 13 लोगों की मौत हो गई थी।2024 में लैंडस्लाइड के कारण दो बसें इसी नदी में बह गई थीं। उन बसों में कुल 63 लोग सवार थे। हर साल मानसून के दौरान यह इलाका और अधिक खतरनाक हो जाता है।त्रिशूली नदी सिर्फ एक जलधारा नहीं है, बल्कि नेपाल की संस्कृति और जीवन का हिस्सा है।मान्यता है कि भगवान शिव ने गोसाइकुंड क्षेत्र में अपना त्रिशूल जमीन में गाड़ा था, जिससे तीन जलधाराएं निकलीं और त्रिशूली नदी बनी।यह नदी तिब्बत क्षेत्र से निकलकर नेपाल के कई जिलों से गुजरती हुई आगे नारायणी नदी में मिल जाती है।पृथ्वी हाईवे के साथ बहने वाली यह नदी पर्यटन,

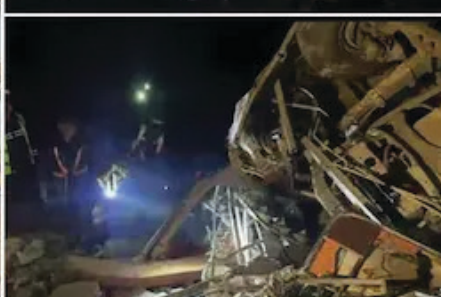

सिंचाई और स्थानीय अर्थव्यवस्था का बड़ा आधार है। यहां राफ्टिंग और ट्रेकिंग के लिए दुनिया भर से लोग आते हैं।लेकिन मानसून और तेज बहाव के समय यही नदी खतरनाक रूप ले लेती है।अस्पतालों में संघर्ष और इंतजार। घायल यात्रियों को अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया है।कुछ लोग अभी भी बेहोश हैं।कुछ अपने परिजनों का नाम पुकार रहे हैं।कई परिवारों को अभी तक यह भी नहीं पता कि उनका अपना व्यक्ति किस अस्पताल में है।अस्पतालों के बाहर बेचैनी साफ दिखाई दे रही है।एक व्यक्ति रोते हुए कह रहा था,फोन आया कि हादसा हुआ है लेकिन अभी तक यह नहीं पता कि मेरा भाई जिंदा है या नहीं।

प्रशासन के सामने बड़ी चुनौती

इस हादसे ने एक बार फिर सड़क सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं।विशेषज्ञ मानते हैं कि पहाड़ी क्षेत्रों में निम्न कदम जरूरी हैं। ड्राइवरों के लिए विशेष प्रशिक्षण। रात में भारी वाहनों पर नियंत्रण। वाहनों की नियमित तकनीकी जांच। खतरनाक मोड़ों पर अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था। अगर इन पर ध्यान नहीं दिया गया तो ऐसे हादसे दोहराए जाते रहेंगे।हादसा सिर्फ खबर नहीं, चेतावनी है। हर बड़ी दुर्घटना हमें कुछ सिखाती है।लेकिन अक्सर हम कुछ समय बाद सब भूल जाते हैं।नेपाल जैसे पहाड़ी देश में सड़क सुरक्षा सिर्फ नियम नहीं, जीवन की जरूरत है।यह हादसा 18 परिवारों के लिए जिंदगी भर का दर्द बन गया है।कई घरों में आज चूल्हा नहीं जला होगा।कई बच्चों ने अपने पिता को खो दिया।कई माता-पिता अब अपने बच्चों का इंतजार कभी पूरा नहीं कर पाएंगे।पहाड़ों में सफर अभी भी भरोसे का नाम हैनेपाल के लोग पहाड़ों के बीच जीना जानते हैं। जोखिम यहां की जिंदगी का हिस्सा है। लेकिन हर सफर उम्मीद के साथ शुरू होता है।पोखरा से काठमांडू जा रही वह बस भी उम्मीदों से भरी थी।किसी ने नहीं सोचा था कि यह सफर आखिरी बन जाएगा।त्रिशूली नदी अब फिर शांत बह रही है, जैसे कुछ हुआ ही न हो। लेकिन उसके किनारों पर उस रात की चीखें अभी भी गूंज रही हैं।और यही हादसा हमें याद दिलाता है कि पहाड़ों के रास्ते सिर्फ सुंदर नहीं होते, वे जिम्मेदारी भी मांगते हैं।

संसार के प्रपंचों से मुक्त कर रहे हैं पूज्य स्वामी जी

@ भारतश्री ब्यूरो

पूज्य स्वामी जी ने गौ माता की सेवा और स्वर्ण मंदिर का संकल्प लिया है, यह बिना भगवान की कृपा के संभव नहीं है। हम कामना करते हैं कि पूज्य स्वामी जी का 100वां जन्म दिवस भी हम यहीं मनाएंगे। पूज्य स्वामी जी ने संसार के सभी प्रपंचों से राधा रानी के चरणों में बिठा दिया है, यही संत का कार्य है। ये इतने बड़े विद्वान है लेकिन नम्र हैं। ये देश विदेशों में सत्संग के द्वारा सबको मार्ग दिखा रहे हैं। हम तो यही प्रार्थना करते हैं कि पूज्य श्री के हृदय में जो संकल्प है वह अवश्य पूरा हो।

परहित सरस धर्म नहि भाई, परपीड़ा सम नहि अधमाई। समाज के उत्थान में संतों का बहुत बड़ा योगदान है। मैं पूज्य स्वामी जी के चरणों में बारंबार प्रणाम करता हूं और कामना करता हूं कि ऐसे महोत्सव हर वर्ष होते हैं और भक्ति श्रद्धा की ज्योति हमेशा जलती रहे।

श्री अनिरुद्धाचार्य जी महाराज (गौरी गोपाल आश्रम, वृंदावन)

गुरु जी हर साल आसन पर बैठे हुए दिखें

यह हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि पूंदावन की भूमि पर हम गुरुदेव जी का जन्म दिन मना रहे हैं और आशीर्वाद ले रहे हैं। आज इतने संतों का हमें आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। में भगवान से हमेशा यह प्रार्थना करना चाहूंगी कि हर साल हम गुरुदेव जी का जन्मदिन ऐसे ही मनाते रहें। गुरु जी मुझे आसन पर बिठा देते हैं, यह इनका बड़प्पन है और एक पिता का फर्ज भी है। एक पुत्री की तरह मैं हमेशा चाहूंगी कि गुरु जी मुझे हर साल इस आसन पर बैठे हुए दिखें। जब गुरु जी मुझे आसन पर बिठाते हैं तो मैं इनके स्वरूप की, चेहरे की रौनक की और मुस्कान की कामना करती हूं। मुझे इनकी छवि बहुत सुन्दर लगती है। मैं प्रार्थना करती हूं पूरी संगत से कि आप इसी आसन पर विराजमान दिखें और सालोंसाल हम आपका जन्म दिन मनाते रहें-

किसी राह पर किसी मोड़ पर
कहीं चल न देना तुम छोड़कर
मेरे हम सफर मेरे हम सफर।

ब्रह्मस्वरूपिणी जगद्गुरु ऋतुखुशबू जी

जिस दिन गुरु जीवन में आए वही है बड़ा दिन

जिस तरह से हमने परम पूज्य सद्गुरुदेव जी का पंचकुला में प्राकट्य दिवस मनाया उसी प्रकार वृंदावन में भी मनाया है। जगद्गुरु जी को जन्म दिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। मन में तो भाव है कि यह प्राकट्य दिवस कभी खत्म न हो। हम हर दिन, हर हफ्ते और हर साल यह दिन मनाएं। जिस दिन हमारे गुरु हमारे जीवन में आए उससे बड़ा कोई दिन हो ही नहीं सकता। गुरु जी को जन्म दिन, ज्योति दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं और आप सभी को बहुत-बहुत बधाई।

श्री जतिन शर्मा वशिष्ठ जी

मां राधा ही है मां दुर्गा

भगवान श्रीकृष्ण राधा हैं और मां राधा हैं भगवान श्रीकृष्ण। धरती पर जितने भी दुख, कष्ट हैं, सबका निवारण दुर्गा का पाठ है, जिसने धरती को, सूरज, चांद, तारों को, आकाश, अग्नि, जल, वायु को बनाया है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश को बनाया है, जो कुछ भी हमें दिखाई दे रहा है, उस सबको पैदा किया है। उसी दुर्गा मां की कृपा से सभी कुछ है, जितने भी ग्रंथ हैं उन सभी में किसी भी देवी-देवता ने यह नहीं कहा कि मैंने सबको पैदा किया है।

मां राधा ही परा और अपरा प्रकृति

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि मां राधा ने कहा है कि मेरी आठ प्रकार की प्रकृति-पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार हैं जो कि निकृष्ट हैं, जो जड़ हैं, जो समाप्त हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं। लेकिन मां परा का स्वरूप हैं। मां सनातन हैं, सत्य हैं, और शाश्वत हैं। मां लक्ष्मी, काली और सरस्वती के तीन रूप हैं जो सृष्टि का पालन, संहार और सृजन करते हैं। ये जम्मू की पावन भूमि है, जहां पर मां स्वयं विराजमान हैं। लेकिन फिर भी यहां रोग, बीमारी और कष्ट तथा समस्याएं हैं क्योंकि ये सब भौतिक प्रकृति अर्थात अपरा के कारण हैं; उसका एक ही बहुत बड़ा कारण यह है कि लोग पाठ नहीं करते। यहां रहकर भी लोग मां का पाठ नहीं करते, पाठ करने से सारे रोग, कष्ट, समस्याएं दूर हो जाते हैं।

इस तरह करें पाठ

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि पाठ यदि निष्कीलन, शापोद्धार के बिना किया जाए तब उसका संपूर्ण लाभ नहीं मिलता है। मां दुर्गा का कथन है कि जो साधक कृष्ण पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को अपना सब कुछ मुझे समर्पण कर देता है तो मैं उससे प्रसन्न हो जाती हूं। जो व्यक्ति परिहार, उत्कीलन, निष्कीलन, शापोद्धार करके विधिपूर्वक मेरा पाठ करता है, उसे ऐश्वर्य-कीर्ति, यश, धन सभी की प्राप्ति होती है। मैं उसकी सभी मनोकामनाओं को पूर्ण कर देती हूं और जो ऐसा नहीं करता है तो उसका नाश हो जाता है। ऐसा दुर्गा सप्तशती में वर्णन है। यह भी वर्णन है कि शिक्षा का विनाश हो जाता है और शरीर भी नष्ट हो जाता है लेकिन विद्या कभी नष्ट नहीं होती है।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि आत्मा न कहीं आता है न जाता है, यह स्थिर है। सबका आत्मा एक है। सभी यहां पर अपने दुखों, रोगों और कष्टों के निवारण के लिए आए हुए हैं, कोई भी व्यक्ति मुक्ति या मोक्ष के बारे में जानने की इच्छा नहीं रखता है। यह भी जरूरी है क्योंकि तन सही होगा तब ही मन पाठ में लगेगा। आत्मा न तो शस्त्र से कटती है, न जल में गलती है और न ही अग्नि में जलती है। यह शाश्वत, सनातन और अकाट्य है। जो आत्मा का रहस्य जान लेता है वही परमात्मा की अनुभूति कर सकता है। यह मन, चित्त, बुद्धि से पार का विषय है। भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि मेरी पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार आठ प्रकार की अपरा प्रकृति है जो कि निकृष्ट है और आत्मा परा है जो शाश्वत है, सत्य है और सनातन है। परमात्मा को इन भौतिक नेत्रों से कभी नहीं देखा जा सकता है। इसके लिए दिव्य दृष्टि की आवश्यकता होती है। जैसे कि भगवान कृष्ण ने अर्जुन को दिव्य दृष्टि प्रदान की थी और वह उनके विश्वरूप को देखने में सफल हुए।

विजयी रथ रुका, उम्मीदें नहीं

दक्षिण अफ्रीका से हार ने भारत को दिखाया सच्चाई का आईना

@ आनंद मीणा

टी20 क्रिकेट का रोमांच ही कुछ ऐसा है कि कुछ ओवरों में कहानी बदल जाती है। कल तक जीत की लय में चल रही क्रिकेट अचानक ऐसे मोड़ पर पहुंच गई जहां उसे अपनी कमजोरियों से सामना करना पड़ा। ICC Men's T20 World Cup 2026 के सुपर आठ मुकाबले में साउथ अफ्रीका ने भारत को 76 रनों से हराकर न केवल उसके विजयी अभियान को रोक दिया, बल्कि सेमीफाइनल की राह भी कठिन कर दी।यह सिर्फ एक हार नहीं थी, बल्कि एक ऐसी कहानी थी जिसमें उम्मीद, दबाव, संघर्ष और सीख सब कुछ शामिल था।

शुरुआत में ही बदल गया मैच का मिजाज

मैच शुरू होने से पहले माहौल पूरी तरह भारत के पक्ष में था। लगातार जीत ने टीम के आत्मविश्वास को ऊंचाई पर पहुंचा दिया था। कप्तान Suryakumar Yadav की अगुवाई में टीम संतुलित दिख रही थी और बल्लेबाजी क्रम मजबूत माना जा रहा था।दक्षिण अफ्रीका के कप्तान Aiden Markram ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। शुरुआत भारत के लिए शानदार रही। तेज गेंदबाज Jasprit Bumrah ने शुरुआती ओवरों में ही दबाव बना दिया और खतरनाक बल्लेबाज Quinton de Kock को बोल्ड कर भारत को पहली सफलता दिलाई।कुछ ही देर में स्कोर 20 रन पर तीन विकेट हो गया। स्टेडियम में बैठे भारतीय दर्शकों को लगा कि मैच जल्दी ही उनके पक्ष में झुक जाएगा। लेकिन टी20 क्रिकेट का असली नाटक यहीं से शुरू हुआ।

ब्रेविस और मिलर ने बदली कहानी

कठिन परिस्थिति में युवा बल्लेबाज Dewald Brevis और अनुभवी David Miller क्रीज पर आए। शुरुआत में दोनों ने समय लिया, फिर धीरे-धीरे आक्रामक रुख अपनाया।ब्रेविस के शॉट्स में आत्मविश्वास था, जबकि मिलर का अनुभव साफ दिखाई दे रहा था। दोनों के बीच 97 रनों की साझेदारी ने मैच का रुख पूरी तरह बदल दिया। भारतीय गेंदबाज जो शुरुआती ओवरों में प्रभावी दिख रहे थे, बीच के ओवरों में लय खो बैठे।मिलर ने सिर्फ 26 गेंदों में अर्धशतक पूरा किया। उनके बल्ले से निकलते चौके-छक्के भारतीय खिलाड़ियों के लिए दबाव का संकेत थे। ब्रेविस ने भी 45 रनों की तेज पारी खेलकर टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया।अंतिम ओवरों में दक्षिण अफ्रीका ने तेजी से रन जोड़े और स्कोर 187 तक पहुंच गया। यह लक्ष्य चुनौतीपूर्ण था, लेकिन भारतीय टीम के हालिया प्रदर्शन को देखते हुए असंभव नहीं लग रहा था।

लक्ष्य का पीछा और बढ़ता दबाव

जब भारत बल्लेबाजी के लिए उतरा तो उम्मीद थी कि सलामी जोड़ी मजबूत शुरुआत देगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। पावरप्ले में ही तीन विकेट गिर गए और मैच का दबाव अचानक भारत पर आ गया।यह वही क्षण था जहां टीम की असली परीक्षा शुरू हुई।टी20 क्रिकेट में अक्सर कहा जाता है कि एक बल्लेबाज मैच जिता सकता है, लेकिन पूरी टीम के बिना टूर्नामेंट नहीं जीता जा सकता। इस मैच में भारत की सबसे बड़ी कमजोरी यही बन गई।ग्रुप चरण में भारत की जीतों में कई बार एक-दो बल्लेबाजों ने मैच संभाला था, लेकिन इस मुकाबले में वह फॉर्म नजर नहीं आई।

चार बल्लेबाज शून्य पर आउट

भारतीय बल्लेबाजी इस मैच में इतनी लड़खड़ा गई कि चार बल्लेबाज खाता भी नहीं खोल सके। यह आंकड़ा ही बताने के लिए काफी था कि टीम किस दबाव से गुजर रही थी।मध्यक्रम से उम्मीद थी कि Hardik Pandya और अन्य बल्लेबाज स्थिति संभालेंगे, लेकिन विकेट गिरने का सिलसिला रुक नहीं सका।सिर्फ शिवम ने संघर्ष दिखाया।

उन्होंने 42 रन की पारी खेलकर मैच को थोड़ा संभालने की कोशिश की, लेकिन दूसरे छोर से लगातार विकेट गिरते रहे।कई बार क्रिकेट सिर्फ तकनीक से नहीं, मानसिक मजबूती से भी जीता जाता है। इस मैच में भारतीय बल्लेबाजों के शॉट चयन में घबराहट साफ दिखाई दे रही थी।

दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाजों का अनुशासन

दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों ने योजना के साथ गेंदबाजी की। Marco Jansen ने चार विकेट लेकर भारत की कमर तोड़ दी, जबकि केशव महाराज ने स्पिन से रन गति पर नियंत्रण रखा।भारतीय बल्लेबाज बड़े शॉट खेलने के दबाव में गलतियां करते चले गए और पूरी टीम 111 रन पर ऑलआउट हो गई।यह सिर्फ स्कोर नहीं था, बल्कि उस आत्मविश्वास के टूटने का संकेत भी था जो लगातार जीत से बना था।

18 मैच बाद मिली हार

यह हार इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि भारत लंबे समय से आईसीसी टूर्नामेंट में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहा था। 18 मैचों बाद मिली इस हार ने टीम को वास्तविकता का आईना दिखा दिया।टी20 विश्व कप में रनों के लिहाज से यह भारत की सबसे बड़ी हार बन गई। इससे पहले भारतीय टीम इतने बड़े अंतर से नहीं हारी थी।लेकिन खेल का यही स्वभाव है। जीत जितनी बड़ी होती है, हार उतनी ही गहरी सीख देती है।

एक खिलाड़ी पर निर्भरता का खतरा

क्रिकेट विशेषज्ञ लंबे समय से कह रहे थे कि भारत की बल्लेबाजी में संतुलन की जरूरत है। कुछ मैचों में एक बल्लेबाज ने मैच जीताया, लेकिन टीम की सामूहिक मजबूती पर सवाल बने रहे।इस मुकाबले में वही चिंता सच साबित हुई।जब शुरुआती बल्लेबाज आउट हुए तो कोई बड़ी साझेदारी नहीं बन सकी। यही वह जगह थी जहां मैच धीरे-धीरे भारत से दूर होता गया।टी20 क्रिकेट में गहराई वाली बल्लेबाजी ही असली ताकत होती है। इस मैच ने भारतीय टीम को यह बात फिर याद दिला दी।हालांकि यह हार निराशाजनक जरूर है, लेकिन टूर्नामेंट अभी खत्म नहीं हुआ है।

सुपर आठ चरण में आगे के मुकाबले भारत के लिए करो या मरो जैसे होंगे।क्रिकेट इतिहास गवाह है कि कई बार बड़ी टीमों ने शुरुआती झटकों के बाद वापसी की है।ड्रेसिंग रूम में भी यही संदेश दिया जा रहा है कि यह हार अंत नहीं, बल्कि सुधार का अवसर है। मैच खत्म होने के बाद स्टेडियम में सन्नाटा था। जो दर्शक जीत की उम्मीद लेकर आए थे, वे चुपचाप बाहर निकलते दिखाई दिए। सोशल मीडिया पर भी मिश्रित प्रतिक्रियाएं देखने को मिलीं।कुछ लोगों ने टीम की आलोचना की, तो कई प्रशंसकों ने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया।क्रिकेट भारत में सिर्फ खेल नहीं, भावना है। इसलिए हर हार दिल को छूती है।भारतीय टीम के सामने अब सबसे बड़ी चुनौती मानसिक मजबूती की है। बल्लेबाजी क्रम में स्थिरता लानी होगी और मध्यक्रम को जिम्मेदारी निभानी होगी।गेंदबाजी ने शुरुआती ओवरों में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन बीच के ओवरों में नियंत्रण बनाए रखना जरूरी होगा।टीम प्रबंधन के लिए यह समय रणनीति पर नए सिरे से सोचने का है। क्योंकि विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में छोटी गलतियां भी बड़ा असर छोड़ती हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

सोना-चांदी की चमक फिर तेज

बढ़ती कीमतों के बीच आम लोगों के सपनों की नई कहानी

@ सौम्या चौबे

23 फरवरी की सुबह जब बाजार खुले तो सर्राफा मंडियों में एक अलग ही हलचल थी। दुकानों के शटर उठते ही सबसे पहले नजरें उस डिजिटल बोर्ड पर गईं जहां रोज की तरह सोने-चांदी के नए दाम लिखे जाते हैं। लेकिन इस बार आंकड़े कुछ ज्यादा ही चौंकाने वाले थे। कीमतें अचानक उछल गई थीं। व्यापारी भी हैरान थे और ग्राहक भी।India Bullion and Jewellers Association के अनुसार, 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 3,362 रुपए बढ़कर 1,58,428 रुपए पर पहुंच गई। एक दिन पहले तक यही सोना 1,55,066 रुपए पर था। दूसरी ओर चांदी ने भी तेज रफ्तार पकड़ी और एक किलो चांदी 15,236 रुपए बढ़कर 2,65,550 रुपए हो गई।सर्राफा बाजार के पुराने व्यापारी कहते हैं कि कीमतों में उतार-चढ़ाव नया नहीं है, लेकिन जिस तरह लगातार तेजी देखी जा रही है, वह पिछले कई वर्षों की तुलना में अलग और अधिक तेज है।

एक परिवार की कहानी में छिपा बाजार का सच

दिल्ली के एक मध्यमवर्गीय परिवार में बेटी की शादी की तैयारी चल रही है। मां ने पिछले साल सोचा था कि धीरे-धीरे थोड़ा-थोड़ा सोना खरीद लेंगी ताकि शादी के समय बोझ कम रहे। लेकिन हर महीने जब वे दुकान पहुंचती हैं तो कीमत पहले से ज्यादा मिलती है।वह मुस्कुराते हुए कहती हैं,पहले सोचते थे सोना सुरक्षित निवेश है, अब लगता है सोना खरीदना ही सबसे बड़ा निवेश बन गया है।यही कहानी देश के लाखों परिवारों की है। भारत में सोना सिर्फ धातु नहीं, बल्कि परंपरा, सुरक्षा और भावनाओं से जुड़ा हुआ है। शादी, त्योहार और पारिवारिक अवसरों पर सोना खरीदना आज भी सामाजिक संस्कृति का हिस्सा है।लेकिन अब बढ़ती कीमतें लोगों को नई तरह से सोचने पर मजबूर कर रही हैं।

2026 की शुरुआत से ही रिकॉर्ड तेजी

2026 की शुरुआत से ही सोने और चांदी के दाम में लगातार उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है, लेकिन कुल मिलाकर रुख तेजी का ही है। इस साल अब तक सोना करीब 25,000 रुपए महंगा हो चुका है, जबकि चांदी में लगभग 35,000 रुपए की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।29 जनवरी को तो बाजार ने नया इतिहास बना दिया था। उस दिन सोने ने 1.76 लाख रुपए प्रति 10 ग्राम का स्तर छुआ, जबकि चांदी 3.86 लाख रुपए प्रति किलो तक पहुंच गई।यह आंकड़े सिर्फ बाजार की चाल नहीं बताते, बल्कि वैश्विक आर्थिक माहौल की दिशा भी दिखाते हैं।

2025 का साल बना टर्निंग पॉइंट

पिछले साल यानी 2025 में सोने और चांदी की कीमतों में असाधारण वृद्धि हुई।31 दिसंबर 2024 को जहां 10 ग्राम सोना करीब 76 हजार रुपए था, वहीं 31 दिसंबर 2025 तक यह बढ़कर 1.33 लाख रुपए हो गया। यानी लगभग 75 प्रतिशत की वृद्धि।चांदी में तो और ज्यादा उछाल देखने को मिला। एक किलो चांदी 86 हजार रुपए से बढ़कर 2.30 लाख रुपए तक पहुंच गई, जो लगभग 167 प्रतिशत की वृद्धि थी।सर्राफा बाजार के जानकार मानते हैं कि यह तेजी केवल घरेलू मांग की वजह से नहीं, बल्कि वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं का परिणाम भी है।

जब भी दुनिया में आर्थिक अस्थिरता बढ़ती है, निवेशक सुरक्षित विकल्प की ओर जाते हैं। सोना सदियों से सुरक्षित निवेश माना जाता रहा है।यही वजह है कि दुनिया भर के केंद्रीय बैंक भी बड़े पैमाने पर सोना खरीद रहे हैं।इन्वेस्टमेंट बैंकिंग कंपनी UBS की रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में वैश्विक केंद्रीय बैंकों ने 863 टन सोना खरीदा। अनुमान है कि 2026 में यह खरीद बढ़कर 950 टन तक पहुंच सकती है।रिपोर्ट यह भी बताती है कि गोल्ड ईटीएफ में निवेश बढ़ रहा है, जिससे कीमतों को और समर्थन मिल रहा है।

1.80 लाख तक जा सकता है सोना

विशेषज्ञों का मानना है कि अगर वैश्विक बाजार में यही रुझान बना रहा तो 2026 के मध्य तक सोना 6,200 डॉलर प्रति औंस तक जा सकता है। भारतीय मुद्रा के हिसाब से देखें तो यह लगभग 1.80 लाख रुपए प्रति 10 ग्राम तक पहुंच सकता है।यह अनुमान निवेशकों के लिए अवसर है, लेकिन आम खरीदारों के लिए चिंता का कारण भी बन रहा है।

छोटे निवेशकों की बदलती रणनीति

पहले लोग एक साथ ज्यादा सोना खरीदते थे, लेकिन अब बाजार का ट्रेंड बदल रहा है। अब लोग छोटी मात्रा में, धीरे-धीरे निवेश कर रहे हैं।कई लोग डिजिटल गोल्ड और गोल्ड ईटीएफ जैसे विकल्पों की ओर भी जा रहे हैं। इससे उन्हें कम पैसे में भी निवेश का मौका मिल रहा है।लखनऊ के एक युवा निवेशक कहते हैं, पहले सोना सिर्फ शादी के लिए खरीदा जाता था, अब निवेश के लिए खरीदा जा रहा है।यह बदलाव भारतीय निवेश संस्कृति में बड़ा परिवर्तन दिखाता है।

चांदी की कीमतों में तेजी

चांदी की कीमतों में तेजी का एक बड़ा कारण औद्योगिक उपयोग भी है। इलेक्ट्रॉनिक्स, सोलर पैनल और नई तकनीकों में चांदी का इस्तेमाल बढ़ रहा है।इस वजह से मांग लगातार बढ़ रही है और कीमतें ऊपर जा रही हैं।विशेषज्ञ मानते हैं कि आने वाले वर्षों में चांदी की औद्योगिक मांग और बढ़ सकती है, जिससे कीमतों में और तेजी देखने को मिल सकती है।

पहले जहां सर्राफा बाजार में त्योहारों के दौरान ज्यादा भीड़ होती थी, अब निवेश के मौसम में भी लोग दुकानों पर पहुंच रहे हैं।व्यापारियों के अनुसार, ग्राहक अब केवल आभूषण नहीं, बल्कि निवेश की दृष्टि से सोने के सिक्के और बार ज्यादा खरीद रहे हैं।एक व्यापारी बताते हैं, अब ग्राहक पूछता है कि कितना रिटर्न मिलेगा, पहले पूछता था डिजाइन कौन सा है।यह बदलाव समय के साथ बाजार की सोच बदलने का संकेत है।भारत में सोना सिर्फ निवेश नहीं, बल्कि भावनाओं का प्रतीक है।मां अपनी बेटी के लिए गहने खरीदती है।

दादा अपने पोते के लिए सोने का सिक्का रखते हैं।त्योहारों पर सोना खरीदना शुभ माना जाता है।यानी सोने की चमक केवल बाजार की नहीं, बल्कि रिश्तों की भी है।लेकिन अब बढ़ती कीमतों ने इन परंपराओं को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया है।

आने वाले समय का संकेत

विशेषज्ञों का मानना है कि जब तक वैश्विक स्तर पर आर्थिक अनिश्चितता बनी रहेगी, सोने और चांदी की कीमतों में मजबूती बनी रह सकती है।हालांकि बीच-बीच में गिरावट भी आ सकती है, लेकिन लंबी अवधि में रुझान सकारात्मक रहने की संभावना है।यानी निवेशकों के लिए अवसर और आम लोगों के लिए चुनौती दोनों साथ-साथ चलेंगे।सोने-चांदी की कीमतें केवल आंकड़े नहीं होतीं। इनके पीछे लाखों कहानियां होती हैं। किसी की बेटी की शादी,किसी का भविष्य का निवेश,किसी की जिंदगी भर की बचत।जब कीमत बढ़ती है तो सिर्फ बाजार नहीं बदलता, लोगों की योजनाएं भी बदल जाती हैं।23 फरवरी की यह तेजी भी ऐसी ही एक कहानी है, जो बताती है कि दुनिया की अर्थव्यवस्था का असर सीधे आम आदमी की जिंदगी तक पहुंचता है।और शायद यही कारण है कि सोने की चमक केवल धातु की चमक नहीं, बल्कि उम्मीदों की चमक भी है।

भारत AI का नया सितारा बनेगा? पानी की समस्या से चुनौती

AI इम्पैक्ट समिट: भारत की नई उड़ान

हाल ही में दिल्ली में हुए AI इम्पैक्ट समिट 2026 ने दुनिया का ध्यान खींचा है, जहां भारत को AI का बड़ा खिलाड़ी बनाने पर बात हुई। इस समिट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत के युवा और स्टार्टअप AI में नई क्रांति ला सकते हैं, न सिर्फ इस्तेमाल करने वाले बल्कि बनाने वाले बनकर। गूगल डीपमाइंड के सीईओ डेमिस हसाबिस और ओपनएआई के सैम ऑल्टमैन जैसे बड़े नामों ने भारत की तारीफ की, बोले कि यहां का टैलेंट और डिजिटल सिस्टम AI को ग्लोबल लेवल पर ले जा सकता है। समिट में 300 से ज्यादा एक्जीबिटर आए, 30 देशों से, और 10 थीम्स पर डिस्कशन हुआ जैसे हेल्थकेयर, एग्रीकल्चर में AI का इस्तेमाल। अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठनों ने भारत की AI रणनीति को सपोर्ट किया, लेकिन कुछ क्रिटिक्स जैसे एमनेस्टी इंटरनेशनल ने कहा कि समिट में गवर्नमेंट और कंपनियों की खराब प्रैक्टिस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। फिर भी, समिट ने भारत AI मिशन को बूस्ट दिया, जहां 20,000 GPU जोड़ने का प्लान है। युवा और एंटरप्रेन्योर्स की भीड़ से साफ है कि भारत AI में आगे बढ़ रहा है, लेकिन बैलेंस्ड तरीके से, जहां टेक्नोलॉजी सबके लिए फायदेमंद हो। यह समिट सिर्फ बातचीत नहीं, बल्कि पार्टनरशिप और इनोवेशन का प्लेटफॉर्म बना, जो भारत को AI पावरहाउस बनाने की दिशा में पहला कदम है। कुल मिलाकर, समिट ने दिखाया कि भारत अब AI का सिर्फ यूजर नहीं, बल्कि लीडर बन सकता है, अगर सही नीतियां और निवेश जारी रहे।

भारत AI पावरहाउस बनने की राह पर

भारत तेजी से AI का बड़ा केंद्र बन रहा है, जहां टैलेंट, डेवलपर कम्युनिटी और गवर्नमेंट की कोशिशें मिलकर काम कर रही हैं। सैम ऑल्टमैन ने कहा कि भारत अब AI में चौथा बड़ा पोल बन रहा है, इंजीनियरिंग टैलेंट और नेशनल विजन से। गिटहब पर भारत की डेवलपर पॉपुलेशन सबसे तेज बढ़ रही है, 2024 में दूसरे नंबर पर पहुंच गई। इंडिया AI मिशन और AI फॉर इंडिया 2030 जैसे प्रोग्राम से सरकार GPU और क्लाउड इंफ्रा पर निवेश कर रही है, ताकि घरेलू AI रिसर्च बढ़े। माइक्रोसॉफ्ट जैसे कंपनियां 2 मिलियन लोगों को AI स्किल्स सिखाने का प्लान बना रही हैं, और 3 बिलियन डॉलर इन्वेस्ट कर रही हैं। पीएम मोदी ने कहा कि भारत AI को सिर्फ इस्तेमाल नहीं करेगा, बल्कि क्रिएट करेगा, स्टार्टअप्स और रिसर्च से। लेकिन चुनौतियां भी हैं, जैसे AI रिसर्च में यूएस और चीन से पीछे होना, और डेटा, टैलेंट की कमी। फिर भी, डिजिटल इंडिया से AI तक का सफर तेज है, जहां पॉलिसी, प्लेटफॉर्म और पब्लिक इंफ्रा AI को इनक्लूसिव बना रहे हैं। वेडबुश जैसे एनालिस्ट कहते हैं कि यह समिट भारत के लिए AI रेवोल्यूशन में बड़ा प्लेयर बनने का मौका है। कुल मिलाकर, भारत का फोकस आउटकम-बेस्ड AI पर है, जहां ह्यूमन इन द लूप रहेगा, और इकोनॉमिक ग्रोथ के लिए इस्तेमाल होगा। अगर ये कोशिशें जारी रहीं, तो भारत ग्लोबल AI में सुपरपावर बन सकता है, लेकिन बैलेंस्ड तरीके से, जहां लोकल जरूरतों को प्राथमिकता मिले।

गूगल की रिपोर्ट: डेटा सेंटर्स की पानी की भूख

गूगल की 2024 एनवायरनमेंटल रिपोर्ट ने चौंकाने वाली बात बताई कि उसके डेटा सेंटर्स ने 2023 में 6.1 बिलियन गैलन साफ पानी इस्तेमाल किया, जो पिछले साल से 17% ज्यादा है। यह पानी मुख्य रूप से AI सर्वर्स को ठंडा रखने के लिए यूज होता है, क्योंकि AI वर्कलोड बढ़ने से हीट ज्यादा बनती है। रिपोर्ट में कहा गया कि गूगल के काउंसिल ब्लफ्स, आयोवा वाले सेंटर ने अकेले 1 बिलियन गैलन पानी पीया, जो 6.5 गोल्फ कोर्स के बराबर है। AI की ग्रोथ से बिजली के साथ पानी की खपत भी बढ़ रही है, और कंपनियां जैसे गूगल, मेटा, माइक्रोसॉफ्ट रिपोर्ट करती हैं कि उनके डेटा सेंटर्स पानी के बड़े कंज्यूमर हैं। लेकिन ट्रांसपेरेंसी की कमी है, कई कंपनियां पूरा डेटा नहीं बतातीं। यूएस में डेटा सेंटर्स 2023 में 17 बिलियन गैलन पानी यूज कर चुके हैं, और 2028 तक यह दोगुना हो सकता है। गूगल कहता है कि वह वॉटर पॉजिटिव बनने की कोशिश कर रहा है, मतलब इस्तेमाल से ज्यादा पानी वापस सिस्टम में डालेगा, लेकिन रिसायकल वॉटर हमेशा काम नहीं करता क्योंकि AI को अल्ट्राप्योर वॉटर चाहिए। यह रिपोर्ट AI की एनवायरनमेंटल कॉस्ट पर सवाल उठाती है, जहां फायदे तो हैं लेकिन रिसोर्सेस पर बोझ भी। भारत जैसे देशों में, जहां पानी पहले से कम है, ऐसे डेटा सेंटर्स का बढ़ना लोकल कम्युनिटी को प्रभावित कर सकता है। कुल मिलाकर, रिपोर्ट बताती है कि AI की रेस में सस्टेनेबल तरीके अपनाने की जरूरत है, वरना पानी की समस्या और बढ़ेगी।

AI से दुनिया में पानी की किल्लत का खतरा

AI की तेज ग्रोथ से ग्लोबल वॉटर स्कार्सिटी बढ़ने का खतरा है, क्योंकि डेटा सेंटर्स पानी के बड़े यूजर हैं। 2027 तक AI इंफ्रा 4.2 से 6.6 बिलियन क्यूबिक मीटर पानी यूज कर सकता है, जो डेनमार्क जैसे देश की सालाना खपत से 4-6 गुना ज्यादा। AI क्वेरी जैसे चैटजीपीटी पर एक रिक्वेस्ट गूगल सर्च से 10 गुना ज्यादा बिजली लेती है, और कूलिंग के लिए पानी। यूएस में नए AI डेटा सेंटर्स पानी-स्कार्स वाले इलाकों में बन रहे हैं, जहां पहले से कंपटीशन है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम कहता है कि AI की पावर यूज इंडिया जितनी हो सकती है, और वॉटर यूज यूएस की ड्रिंकिंग वॉटर जरूरत के बराबर। क्लाइमेट चेंज से पानी की कमी बढ़ रही है, जहां सिर्फ 0.5% पानी इस्तेमाल लायक है। AI हेल्प कर सकता है, जैसे वॉटर मैनेजमेंट में, इरिगेशन ऑप्टिमाइज करके या वेस्टवॉटर ट्रीटमेंट में, लेकिन उसका खुद का फुटप्रिंट बड़ा है। यूएन रिपोर्ट कहती है कि दुनिया 'ग्लोबल वॉटर बैंकRUPT-CY' में जा रही है, जहां AI जैसे इंडस्ट्रीज बोझ बढ़ा रही हैं। भारत में AI समिट ने इसे छुआ, लेकिन ज्यादा फोकस नहीं। बैलेंस्ड व्यू से, AI फायदेमंद है लेकिन गवर्नेंस चाहिए, जैसे वॉटर रिस्क को इन्वेस्टर रडार पर रखना। अगर AI को सस्टेनेबल नहीं बनाया, तो पानी की समस्या सोशल, पॉलिटिकल और इकोलॉजिकल रिस्क बढ़ाएगी। कुल मिलाकर, AI की थर्स्ट को मैनेज करने के लिए नई टेक्नोलॉजी और पॉलिसी जरूरी हैं, वरना फ्यूचर में किल्लत शुरू हो जाएगी।

बैलेंस्ड विकास: चुनौतियां और आगे का रास्ता

AI इम्पैक्ट समिट से भारत को पावरहाउस बनाने का सपना है, लेकिन पानी की समस्या से बैलेंस रखना जरूरी। एक तरफ AI हेल्थ, एग्रीकल्चर में मदद करेगा, लेकिन डेटा सेंटर्स की वॉटर यूज से स्कार्सिटी बढ़ सकती है। गूगल जैसी रिपोर्ट्स बताती हैं कि AI की ग्रोथ एनवायरनमेंट पर बोझ डाल रही है, इसलिए सस्टेनेबल प्रैक्टिस अपनानी होंगी जैसे वॉटर रिसायकलिंग, एनर्जी एफिशिएंट चिप्स। भारत में AI मिशन में एनवायरनमेंट को शामिल करना चाहिए, जहां लोकल वॉटर रिसोर्सेस की प्रोटेक्शन हो। ग्लोबल लेवल पर यूएन जैसे संगठन कहते हैं कि AI गवर्नेंस से रिस्क मैनेज कर सकते हैं, जैसे AI को वॉटर मैनेजमेंट में यूज करके। लेकिन इंडस्ट्रीज को ट्रांसपेरेंट होना पड़ेगा, वॉटर फुटप्रिंट रिपोर्ट करना। भारत का फायदा है कि उसका टैलेंट AI को इनक्लूसिव बना सकता है, जहां डेवलपमेंट सबके लिए हो। चुनौतियां जैसे डेटा प्राइवेसी, जॉब लॉस भी हैं, लेकिन ऑपर्चुनिटी ज्यादा। अगर समिट की बातों को अमल में लाया जाए, तो भारत AI में लीडर बनेगा बिना एनवायरनमेंट को नुकसान पहुंचाए। कुल मिलाकर, थॉट-प्रोवोकिंग तरीके से सोचना चाहिए कि AI की रेस में पानी जैसी बेसिक जरूरतों को नजरअंदाज न करें, बल्कि स्मार्ट सॉल्यूशन से बैलेंस बनाएं। यह फ्यूचर की कुंजी है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

राधा कहाँ है-2

रात में, कुछ ही समय मिला तो भी
क्षणभर कान्हा दौड़ के आया

प्रतिदिन सी पुष्पित थी लताएँ
सुगंध वर्षित चाँदनी में स्नात

बिना पुष्प आंजे बिना सज-धज के
बिना आँसू बहाए खड़ी थी निश्चल

परिचित संकेत स्थान; एकांत पथिक
मात्र चकवा ही रोता था बीच-बीच में

बहुत देर बिना उत्तर-श्रवण!
पलभर कान्हा दौड़ आया,

श्याम वक्षःस्थल पर सिसककर आश्लेषित
एक चुंबन मात्र ले के, "मम राधिके,

बिछुड़ता हूँ" मात्र कह के
छिप गया अंधकार में, अदृश्य चाँदनी,

सब जल मिटा गगन में मेघगर्जन से!
कहा बिछुड़ता हूँ मैं, पर

"लौटूँगा" मेरे कान्हा ने कहा नहीं
यह भी नहीं कहा वियोग सहो

थोड़ी देर, आऊँगा, रोना मत
जाने बिना पुकारते हो तू

रे कोकिल 'आएगा नहीं', 'आएगा नहीं' कभी...
हे राधारानी, कहाँ है तू?

पथ के रथ-गमन चिह्न देख-देख के
दौड़-दौड़ के जाने वाली

कोई दुःखी नारी को
किसी ने देख अगले दिन

शीघ्र खड़ी चिंतित, पहुँचना मत साथ, कह के
उसे देखा तो थी धीरे निकलती हुई किसी मार्ग से

जपती थी 'हरि' 'हरि'
अश्रुधारा बहती थी

अस्त-व्यस्त केश मलिन वस्त्र
वदन झुका के जा रही थी कहीं

श्रीराधा, गोकुल की रानी, प्रेम से
चुराने वाली माधव का मन

वही है क्या रोती-कलपती अकेली भटकती
यह निरालंब सम्भ्रान्त, अनाथ नारी!

विरहिणी दुःखी सहेगी नहीं यह
महाव्यथा, नाथ कठोर है तू क्या?

अधरों पर अधर दबा के मंत्रित
मधुर वाणी है असत्य क्या?

उसने जिसे दिया अनुराग, ग्वाला नहीं वह
राजकुलजात, हमारे ईश

कसेगी नहीं पीताम्बराञ्चल और
खुरदरा वसनाग्र इस बेचारी का।

फिर भी, भूल गए क्या? बीतते समय
मंगल-प्रहर रात के

प्रभात में लज्जायुक्त वदन
झुक के पाटल सा संकुचित

जा रही थी कालिन्दी तीर
स्नान करने राधा अकेली

क्षण भर देख सखियाँ शीघ्र
हँस पड़तीं, दूर भागने का कारण क्या?

वह झन-झनी हँसी गूँजती सर्वत्र
क्या कारण इसके मुख छिपाने का?

यह समझे बिना रुक जाती, तिरछी
आँखों से दिखाती है सखी

अनजाने पहने है राधा छोटा सा पीतांबर!
गया तो था पहन के नीलांचल

गाय चराने आज घनश्याम!

अकेली

मैंने अकेले रहना सीख लिया
गाढ़े जंगल के बीच, घुप् अँधेरों में,

एक अकेले अपने से लगते पेड़ के तले
जिसके पीछे से अचानक प्रकट होते

साँप और जंगली जानवर
वहाँ बिना चीख़े, चिल्लाए

रोये-बिलखे
निर्भीक हो

मैं अकेले रहना सीख चुकी
मैंने अकेले यहाँ से गुज़रना सीख लिया है

बिना तुम्हारे हाथों का सशक्त संबल पाए
दुर्गम रास्तों के बीचोबीच होते हुए

बग़ैर किसी मंज़िल के,
अपना सिर झुकाकर
अब अकेले चलना सीख चुकी मैं

मैंने अकेले गाना सीख लिया है

तब भी जब कोई हँसते हुए
मेरे गीत के साथ न जुड़ सका,

गीत जो किसी के लिए नहीं गाया गया
यूँ ही, बहरे लोगों के सामने

अकेले अपने शब्दों को थामे,
बिना कँपकँपाए

बिना आशंकित हुए
अब अकेले गाना सीख चुकी मैं

मैंने अकेले सोना सीख लिया है
बिना सपनों के, बिना आँसुओं में भीगे

आधी रात में अचानक जागने पर
अपने साथी को बग़ल में न पाकर भी

अपने हाथों को उपादान के आग्रह में उठाए बग़ैर
नींद की गोली को चुंबन की मुद्रा में रख, सेवन कर

अपने तपते माथे पर स्वयं हाथ रख
अब अकेले सोना सीख चुकी मैं

अब तुम्हारे बिन अकेले गिरकर,
एकांत में मरना भी सीख लिया है

मेरे इर्द-गिर्द न किसी का दारुण रुदन का स्वर
न ही मेरा निढाल सर तुम्हारी गोद में

तुम्हारे पुण्य हाथों से अंजलि भर जल से भी वंचित
(इस आख़िरी वक्त में)

तुम्हारी निगाह में मेरी दृष्टि अनुपस्थित
हाsss

हाsss
बिना विदा कहे, बिना तुमसे इजाज़त माँगे
अब अकेले गिरकर मरना सीख चुकी मैं।

सुगतकुमारी
मलयालम की सुप्रतिष्ठित
कवयित्री और सामाजिक
कार्यकर्ता

छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट का पुराना बलात्कार फैसला: क्यों मचा बवाल?

मामले की शुरुआत और घटना

यह कहानी साल 2004 से शुरू होती है, जब छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में एक नाबालिग लड़की के साथ यौन हमले की घटना हुई। अभियुक्त का नाम वासुदेव गोंड था। अभियोजन पक्ष के अनुसार, 21 मई 2004 को आरोपी ने लड़की को जबरदस्ती अपने घर में खींचा, उसके कपड़े उतारे, हाथ-पैर बांधे और मुंह में कपड़ा ठूंस दिया। फिर उसने अपने निजी अंग को लड़की के निजी अंग पर रगड़ा और वीर्य स्खलन किया, लेकिन पूर्ण प्रवेश नहीं हुआ। लड़की की मां ने उसे बचाया। ट्रायल कोर्ट ने 2005 में आरोपी को आईपीसी की धारा 376(1) के तहत बलात्कार का दोषी ठहराया और 7 साल की सजा दी, साथ में धारा 342 के तहत 6 महीने की सजा। लेकिन आरोपी ने हाईकोर्ट में अपील की। हाईकोर्ट ने 16 फरवरी 2026 को फैसला सुनाया कि यह बलात्कार नहीं, बल्कि बलात्कार का प्रयास है। वजह यह थी कि चिकित्सकीय सबूत में लड़की का हाइमन बरकरार था और गवाही में विरोधाभास था। लड़की ने पहले कहा कि आंशिक प्रवेश हुआ, लेकिन बाद में कहा कि आरोपी ने अपना अंग ऊपर रखा लेकिन प्रवेश नहीं किया। अदालत ने कहा कि प्रवेश के बिना स्खलन बलात्कार नहीं माना जा सकता। सजा को घटाकर 3 साल 6 महीने कर दिया गया। यह फैसला पुराने कानून पर आधारित था, जो 2013 से पहले लागू था। उस समय आईपीसी की धारा 375 में बलात्कार की परिभाषा बहुत संकीर्ण थी, जिसमें सिर्फ योनि में पूर्ण लिंग प्रवेश को ही बलात्कार माना जाता था। इस फैसले ने पूरे देश में बहस छेड़ दी है, क्योंकि यह महिलाओं की सुरक्षा और न्याय प्रणाली पर सवाल उठाता है। कई लोग इसे पुरानी सोच का प्रतीक मानते हैं, जो पीड़िता की पीड़ा को नजरअंदाज करता है। वहीं, कुछ कानूनी विशेषज्ञ कहते हैं कि अदालत ने कानून का सख्ती से पालन किया। लेकिन कुल मिलाकर, यह मामला दिखाता है कि पुराने कानून कैसे आज के समय में न्याय को प्रभावित कर सकते हैं।

अदालत का तर्क और कानूनी आधार

छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के जस्टिस नरेंद्र कुमार व्यास ने फैसले में स्पष्ट कहा कि बलात्कार के लिए प्रवेश जरूरी है, स्खलन नहीं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के 2004 के एक मामले का हवाला दिया, जहां कहा गया था कि इरादा और प्रत्यक्ष कार्रवाई होने पर भी बिना प्रवेश के बलात्कार नहीं माना जाता। यहां पीड़िता की गवाही में असंगति थी- उसने कहा कि आरोपी ने 10 मिनट तक अपना अंग ऊपर रखा लेकिन प्रवेश नहीं किया। चिकित्सक ने भी कहा कि हाइमन बरकरार है और सिर्फ एक उंगली की जगह है, जो आंशिक प्रयास की ओर इशारा करता है। अदालत ने कहा कि आरोपी का इरादा अपराधिक था, लेकिन सबूत पूर्ण बलात्कार साबित नहीं कर पाए। इसलिए धारा 376/511 के तहत प्रयास का दोषी ठहराया। पुराने कानून में बलात्कार की परिभाषा सिर्फ योनि में लिंग प्रवेश तक सीमित थी। 2013 के संशोधन से पहले, कानून विक्टोरियन युग की सोच पर आधारित था, जो महिलाओं की पवित्रता पर जोर देता था, न कि उनके शारीरिक अधिकार पर। अदालत ने कहा कि यहां तैयारी से आगे जाकर प्रयास हुआ, जैसे कमरे में बंद करना, कपड़े उतारना और रगड़ना। लेकिन प्रवेश न होने से बलात्कार नहीं। अगर नया कानून लागू होता, तो लेबिया मेजोरा तक कोई भी प्रवेश बलात्कार माना जाता। इस फैसले ने दिखाया कि कानूनी तकनीकीताएं कैसे न्याय को प्रभावित करती हैं। कई लोगों को लगता है कि यह पीड़िता की बात को कम करके आंकता है, जबकि अदालत का कहना है कि सबूतों पर आधारित होना चाहिए। कुल मिलाकर, यह तर्क कानूनी सख्ती दिखाता है, लेकिन सामाजिक न्याय की कमी भी। यह बहस छेड़ता है कि क्या पुराने मामलों में नए कानून की भावना को अपनाना चाहिए।

जनता में गुस्से की वजहें

यह फैसला आने के बाद पूरे देश में हंगामा मच गया, क्योंकि लोगों को लगा कि यह महिलाओं के खिलाफ है। सोशल मीडिया पर JusticeForSurvivors जैसे हैशटैग ट्रेंड करने लगे। संगीतकार विशाल ददलानी ने इसे 'रेपिस्ट बचाओ अभियान' कहा और अदालत की आलोचना की। कई महिला अधिकार संगठनों ने कहा कि यह 2012 दिल्ली गैंगरेप के बाद हुए बदलावों को पीछे धकेलता है। उस समय प्रदर्शनों में मांग थी कि बलात्कार की परिभाषा को व्यापक बनाया जाए, ताकि गैर-प्रवेश वाले हमले भी दंडनीय हों। लेकिन यहां पुराने कानून का इस्तेमाल करके अदालत ने तकनीकी आधार पर फैसला दिया, जो पीड़िता की मानसिक और शारीरिक पीड़ा को नजरअंदाज लगता है। लोगों का कहना है कि हाइमन बरकरार होने से बलात्कार नकारना पुरानी मिथक है, क्योंकि हाइमन कई कारणों से बरकरार रह सकता है। मीडिया में संपादकीय लिखे गए कि यह फैसला न्याय प्रणाली की कमजोरी दिखाता है। कुछ लोग कहते हैं कि यह पुरुष प्रधान सोच को बढ़ावा देता है, जहां तकनीकीताएं बचाव बन जाती हैं। वहीं, दूसरी तरफ कुछ वकील कहते हैं कि अदालत कानून से बंधी है और सबूतों पर फैसला करना जरूरी है। लेकिन कुल मिलाकर, गुस्सा इस बात से है कि 22 साल बाद भी न्याय अधूरा लगता है। यह मामला महिलाओं की सुरक्षा पर सवाल उठाता है और बताता है कि कानून कितने धीमे बदलते हैं। सोशल मीडिया पर हजारों पोस्ट आए, जहां लोग कहते हैं कि पीड़िता की आवाज को मजबूत बनाना चाहिए, न कि तकनीकी कमियों पर जोर देना। यह विवाद दिखाता है कि समाज अब पुरानी परिभाषाओं को स्वीकार नहीं कर रहा।

कानूनी बदलाव और आगे का प्रभाव

2013 के आपराधिक कानून संशोधन ने बलात्कार की परिभाषा को बदल दिया। पहले धारा 375 में सिर्फ योनि में लिंग प्रवेश को बलात्कार माना जाता था, लेकिन अब किसी भी अंग या वस्तु का योनि, मुंह, मूत्रमार्ग या गुदा में कोई भी प्रवेश शामिल है। यहां तक कि लेबिया तक पहुंचना भी काफी है। न्यूनतम सजा 7 साल की अनिवार्य हो गई। अगर यह मामला नए कानून के तहत होता, तो शायद बलात्कार साबित हो जाता। लेकिन चूंकि घटना 2004 की थी, पुराना कानून लागू हुआ। यह फैसला पुराने मामलों पर प्रभाव डाल सकता है, जहां तकनीकी आधार पर दोषमुक्ति हो सकती है। विशेषज्ञ कहते हैं कि यह न्याय में देरी की समस्या दिखाता है- 22 साल लग गए फैसले में। इससे पीड़िताओं का विश्वास कम होता है। आगे, यह बहस छेड़ सकता है कि पुराने मामलों में नए कानून की भावना को अपनाया जाए। सुप्रीम कोर्ट के पुराने फैसलों में भी प्रवेश पर जोर है, लेकिन अब सोच बदल रही है। यह मामला महिलाओं के अधिकारों पर ध्यान दिलाता है और बताता है कि कानून को और मजबूत बनाने की जरूरत है। कुल मिलाकर, यह प्रभाव दिखाता है कि कैसे कानूनी बदलाव समाज को प्रभावित करते हैं और न्याय को अधिक संवेदनशील बनाने की मांग बढ़ाते हैं।

विशेषज्ञों की राय और सीख

कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि अदालत ने सही कानून लागू किया, लेकिन यह पुरानी सोच का उदाहरण है। इंडियन एक्सप्रेस के संपादकीय में कहा गया कि यह फैसला दशकों की प्रगति को पीछे धकेलता है। महिला अधिकार कार्यकर्ता कहते हैं कि पीड़िता की गवाही को संदेह से देखना गलत है, क्योंकि ट्रॉमा से यादें असंगत हो सकती हैं। सुप्रीम कोर्ट के पुराने केस जैसे कोप्पुला वेंकटराव में भी यही सिद्धांत है। लेकिन अब 2013 के बाद, कानून पीड़िता-केंद्रित है। यह सीख देता है कि न्याय प्रणाली को तेज और संवेदनशील बनाना चाहिए। कुल मिलाकर, यह राय है कि समाज को ऐसे फैसलों से सीख लेकर आगे बढ़ना चाहिए।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

अभिषेक शर्मा की जर्सी पहेली

सिराज का नंबर 73, भूल या किस्मत का खेल?

टी20 वर्ल्ड कप 2026 में भारत और नीदरलैंड्स के बीच अहमदाबाद में खेले गए ग्रुप स्टेज मैच में एक अजीब वाकया हुआ। भारत के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी। ओपनर अभिषेक शर्मा जब बैटिंग के लिए उतरे, तो सबकी नजरें उनकी जर्सी पर रुक गईं। उन्होंने अपनी खुद की जर्सी नहीं पहनी थी, बल्कि मोहम्मद सिराज की जर्सी नंबर 73 में नजर आए। पहले तो वे अर्शदीप सिंह की जर्सी में दिखे, लेकिन आखिरी समय में सिराज की जर्सी में बदलाव किया। मैच कमेंटेटर्स नासिर हुसैन और सुनील गावस्कर ने बताया कि अभिषेक अपनी जर्सी टीम होटल में भूल गए थे। इस वजह से जल्दी में साथी खिलाड़ी की जर्सी इस्तेमाल की गई। मैच अधिकारियों ने इसकी मंजूरी दी ताकि खेल में देरी न हो। भारत ने उस मैच में 193 रन बनाए, जिसमें शिवम दुबे की हाफ सेंचुरी और हार्दिक पांड्या की तेज हिटिंग शामिल थी। नीदरलैंड्स 176 रन पर रुक गया और भारत 17 रन से जीता। लेकिन अभिषेक की जर्सी ने सोशल मीडिया पर तहलका मचा दिया। कुछ फैन्स ने इसे मजाक में लिया, जबकि कुछ ने नियमों पर सवाल उठाए। यह घटना दिखाती है कि क्रिकेट में छोटी-छोटी बातें कैसे बड़ी बहस बन जाती हैं। क्या यह सिर्फ एक भूल थी या कुछ और? इस पर विचार करने से पता चलता है कि खिलाड़ी कितने दबाव में खेलते हैं। अभिषेक की यह हरकत उनके हाल के फॉर्म को देखते हुए और दिलचस्प हो जाती है, जहां वे लगातार तीन मैचों में शून्य पर आउट हुए। क्या जर्सी बदलने से किस्मत बदलती है? यह सवाल कई लोगों के मन में उठा। कुल मिलाकर, यह वाकया क्रिकेट की अनिश्चितता को दर्शाता है, जहां योजना के बावजूद अप्रत्याशित चीजें हो सकती हैं।

जर्सी बदलने की असली वजह

अभिषेक शर्मा ने सिराज की जर्सी क्यों पहनी, इसका सीधा जवाब है - वे अपनी जर्सी होटल में भूल गए। मैच के दौरान ग्राउंड रिपोर्ट्स से पता चला कि उनकी जर्सी ड्रेसिंग रूम में थी, लेकिन भारतीय पारी शुरू होने से पहले कोई टीम सदस्य उसे समय पर नहीं ला सका। इसलिए, जल्दबाजी में पहले अर्शदीप सिंह की जर्सी ट्राई की गई, लेकिन फिटिंग सही न होने पर सिराज की जर्सी चुनी गई। सिराज उस मैच में प्लेइंग इलेवन में नहीं थे, इसलिए उनकी जर्सी उपलब्ध थी। कमेंटेटर्स ने इसे साफ बताया कि यह कोई बड़ा रहस्य नहीं, बल्कि एक साधारण मानवीय भूल थी। कुछ रिपोर्ट्स में यह भी जिक्र है कि अभिषेक को टूर्नामेंट के दौरान पेट की बीमारी हुई थी, जिससे वे एक मैच मिस कर चुके थे और वजन भी कम हुआ। अस्पताल में दो रातें गुजारने के बाद वे वापस आए, लेकिन फॉर्म नहीं लौटा। क्या बीमारी की वजह से वे चीजें भूलने लगे? यह सवाल उठता है, लेकिन कोई पक्का सबूत नहीं। टीम सूत्रों ने पुष्टि की कि मैच शुरू होने से पहले देरी न हो, इसलिए अधिकारियों की मंजूरी से यह बदलाव किया गया। यह घटना दिखाती है कि प्रोफेशनल स्पोर्ट्स में कितनी छोटी गलतियां बड़ी सुर्खियां बन जाती हैं। अभिषेक जैसे युवा खिलाड़ी पर पहले से ही दबाव है,

क्या हुआ मैदान पर?

और ऐसी भूल से उनका मनोबल प्रभावित हो सकता है। लेकिन क्या यह सिर्फ भूल थी या जानबूझकर? कुछ फैन्स मानते हैं कि लगातार डक से बचने के लिए उन्होंने टोटका आजमाया। हालांकि, आधिकारिक बयान यही कहते हैं कि यह दुर्घटना थी। क्रिकेट में ऐसे वाकये पहले भी हुए हैं, जैसे खिलाड़ी हेलमेट या ग्लव्स भूल जाते हैं। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि खिलाड़ी इंसान हैं, और गलतियां सब करते हैं। कुल मिलाकर, वजह साफ है, लेकिन बहस जारी है।

टोटके की अफवाह और फैन्स की राय

सोशल मीडिया पर अभिषेक की जर्सी को लेकर अफवाहें फैलीं कि यह जीरो से बचने का टोटका था। अभिषेक टूर्नामेंट में यूएसए और पाकिस्तान के खिलाफ लगातार दो डक पर आउट हुए थे, और फैन्स ने सोचा कि सिराज की जर्सी पहनकर वे किस्मत बदलना चाहते थे। सिराज खुद बल्लेबाजी में कमजोर माने जाते हैं, लेकिन कुछ ने मजाक में कहा कि "सिराज की जर्सी भी अभिशापित है" क्योंकि अभिषेक फिर डक पर आउट हुए। एक्स (पूर्व ट्विटर) पर पोस्ट्स में फैन्स ने लिखा कि "अभिषेक ने सब कुछ ट्राई किया, लेकिन स्कोर नहीं बना"। एक यूजर ने कहा, "सिराज बैटिंग टिप्स दे रहे हैं, क्या मजाक है"। दूसरे ने कमेंट किया, "सुपर 8 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ वापसी होनी चाहिए, वरना टीम से बाहर"। कुछ ने इसे सुपरस्टिशन माना, जैसे क्रिकेटर्स अक्सर लकी चार्म इस्तेमाल करते हैं। लेकिन कोई आधिकारिक बयान इसकी पुष्टि नहीं करता। अभिषेक की हाल की 7 पारियों में 5 डक हैं, जो दबाव दिखाता है। फैन्स की राय बंटी हुई है - कुछ सहानुभूति रखते हैं कि युवा खिलाड़ी को समय दो, जबकि कुछ सख्त हैं कि फॉर्म न हो तो बदलाव लाओ। संजू सैमसन जैसे बैकअप का जिक्र हुआ, जिन्होंने साउथ अफ्रीका के खिलाफ अच्छा खेला। यह बहस विचारोत्तेजक है कि क्रिकेट में मानसिक पक्ष कितना महत्वपूर्ण है। क्या टोटके काम करते हैं? इतिहास बताता है कि नहीं, लेकिन खिलाड़ी आजमाते रहते हैं। कुल मिलाकर, फैन्स की प्रतिक्रियाएं दिखाती हैं कि क्रिकेट सिर्फ खेल नहीं, भावनाओं का तूफान है। क्या अभिषेक इस दबाव से उबर पाएंगे? यह देखना बाकी है।

क्या जर्सी बदलना नियमों के खिलाफ है?

आईसीसी के नियमों के मुताबिक, खिलाड़ियों को अपनी यूनिफॉर्म में खेलना चाहिए, जिसमें जर्सी पर नाम और नंबर साफ दिखे। लेकिन असाधारण स्थिति में, मैच अधिकारियों की मंजूरी से बदलाव की अनुमति है। अभिषेक के मामले में, डुप्लीकेट नंबर नहीं था क्योंकि सिराज प्लेइंग इलेवन में नहीं थे। नियम कहते हैं कि यूनिफॉर्म एक जैसी होनी चाहिए, प्रोफेशनल दिखे, और खिलाड़ी की पहचान साफ हो। अगर कोई खिलाड़ी जर्सी भूल जाए, तो अस्थायी समाधान मंजूर है, बशर्ते खेल की गरिमा बनी रहे। कई रिपोर्ट्स में पुष्टि हुई कि अभिषेक ने नियम नहीं तोड़े, और कोई जुर्माना नहीं लगा। क्रिकेट इतिहास में ऐसे उदाहरण हैं, जैसे खिलाड़ी स्पेयर किट इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अगर प्लेइंग इलेवन में दो एक ही नंबर हों, तो समस्या हो सकती है। यहां ऐसा नहीं था। यह घटना सोचने पर मजबूर करती है कि नियम कितने लचीले हैं। क्या आईसीसी को सख्त बनाना चाहिए? या अप्रत्याशित स्थितियों के लिए जगह रखनी चाहिए? संतुलित नजरिए से, लचीलापन जरूरी है क्योंकि क्रिकेट लंबा खेल है और गलतियां हो सकती हैं। कुछ विशेषज्ञों ने कहा कि यह कोई बड़ा उल्लंघन नहीं, बल्कि व्यावहारिक समाधान था। फैक्ट चेक रिपोर्ट्स ने साफ किया कि कोई नियम टूटा नहीं। कुल मिलाकर, यह लीगल था, लेकिन बहस ने नियमों की समझ बढ़ाई। क्या भविष्य में ऐसी घटनाओं से बचने के लिए टीम मैनेजमेंट सतर्क होंगे? यह विचारणीय है।

अभिषेक का फॉर्म और आगे की राह

अभिषेक शर्मा टी20 वर्ल्ड कप में तीन लगातार डक पर आउट होकर इतिहास रच चुके हैं - पहला खिलाड़ी जिसने ऐसा किया। नीदरलैंड्स के खिलाफ आर्यन दत्त की गेंद पर बोल्ड हुए, जहां उन्होंने पुल शॉट खेलने की कोशिश की लेकिन चूक गए। इससे पहले यूएसए के खिलाफ कैच आउट और पाकिस्तान के खिलाफ स्पिन पर आउट हुए। टूर्नामेंट में वे नामीबिया का मैच बीमारी से मिस कर चुके थे। अब सुपर 8 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ मैच है, जहां उनका फॉर्म अहम होगा। कप्तान सूर्यकुमार उनकी क्षमता पर भरोसा रखते हैं, लेकिन दबाव बढ़ रहा है। संजू सैमसन जैसे विकल्प तैयार हैं, जिनका औसत साउथ अफ्रीका के खिलाफ बेहतर है। अभिषेक आईपीएल में सनराइजर्स हैदराबाद के लिए अच्छा खेल चुके हैं, लेकिन इंटरनेशनल स्तर पर संघर्ष कर रहे। क्या जर्सी वाकया उनके मनोबल को तोड़ेगा? या इससे मजबूत बनेंगे? क्रिकेट विशेषज्ञ कहते हैं कि युवा खिलाड़ियों को समय दो, लेकिन परफॉर्मेंस जरूरी है। भारत ग्रुप जीत चुका है, लेकिन सुपर 8 में चुनौती कड़ी होगी। अभिषेक को बैटिंग प्रैक्टिस और मेंटल कोचिंग की जरूरत है। यह स्थिति विचारोत्तेजक है कि फॉर्म कितनी जल्दी बदल सकती है। क्या वे वापसी करेंगे? फैन्स उम्मीद रखते हैं। कुल मिलाकर, यह उनके करियर का टेस्टिंग टाइम है।

ईरान-अमेरिका परमाणु समझौता

सहमति की राह या टकराव का खतरा?

ईरान और अमेरिका के बीच परमाणु कार्यक्रम पर बातचीत एक बार फिर सुर्खियों में है, जो दोनों देशों के रिश्तों में एक बड़ा मोड़ ला सकती है। ये वार्ताएं फरवरी 2026 में शुरू हुईं, जब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान को चेतावनी दी कि अगर जल्दी कोई समझौता नहीं हुआ तो गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। पहले दौर की बातचीत ओमान में हुई, जहां दोनों पक्षों ने अप्रत्यक्ष रूप से अपने विचार रखे, और दूसरा दौर स्विट्जरलैंड के जेनेवा में पिछले हफ्ते संपन्न हुआ। ये चर्चाएं 2015 के जेसीपीओए समझौते की याद दिलाती हैं, जिसे ट्रंप ने अपनी पहली सरकार में तोड़ दिया था, क्योंकि उनका मानना था कि ये ईरान को परमाणु हथियार बनाने से नहीं रोक पाया। अब ट्रंप की दूसरी सरकार में, अमेरिका ईरान से शून्य यूरेनियम संवर्धन की मांग कर रहा है, जबकि ईरान कह रहा है कि उसका कार्यक्रम शांतिपूर्ण है और संयुक्त राष्ट्र की निगरानी में है। हाल के महीनों में मध्य पूर्व में तनाव बढ़ा है, जहां अमेरिका ने अपने युद्धपोत और लड़ाकू विमान तैनात किए हैं, जैसे यूएसएस गेराल्ड आर फोर्ड कैरियर की तैनाती। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि बातचीत सकारात्मक रही, लेकिन कोई बड़ा ब्रेकथ्रू नहीं हुआ। विशेषज्ञों का कहना है कि ये वार्ताएं ईरान की आर्थिक मुश्किलों और अमेरिका की क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताओं से जुड़ी हैं। ईरान पर लगे प्रतिबंधों ने उसकी अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है, और वह इन्हें हटवाने के लिए तैयार है, लेकिन अपनी संप्रभुता पर समझौता नहीं करना चाहता। दूसरी ओर, अमेरिका इजराइल और अरब देशों के साथ मिलकर ईरान को नियंत्रित रखना चाहता है। ये पृष्ठभूमि बताती है कि दोनों देशों के लिए ये बातचीत सिर्फ परमाणु मुद्दे से ज्यादा है – ये क्षेत्रीय शक्ति संतुलन और वैश्विक स्थिरता से जुड़ी है। अगर सफल हुई तो मध्य पूर्व में शांति आ सकती है, लेकिन असफलता से युद्ध का खतरा बढ़ सकता है। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने कहा कि उनका देश दबाव में नहीं झुकेगा, जो बातचीत को और जटिल बनाता है। कुल मिलाकर, ये वार्ताएं दोनों पक्षों के लिए एक परीक्षा हैं, जहां इतिहास और वर्तमान की चुनौतियां टकरा रही हैं।

दोनों देशों की मांगें और रेड लाइन्स

ईरान और अमेरिका की मांगें इस समझौता वार्ता में मुख्य बाधा बनी हुई हैं, जो दोनों के लिए अहम मुद्दे छिपाए हुए हैं। अमेरिका की मुख्य मांग है कि ईरान अपना यूरेनियम संवर्धन पूरी तरह बंद करे, क्योंकि ट्रंप का मानना है कि ये परमाणु हथियार बनाने की दिशा में कदम है। अमेरिकी अधिकारियों ने साफ कहा कि शून्य संवर्धन के बिना कोई समझौता नहीं होगा, और वे ईरान से मजबूत सुरक्षा उपायों की उम्मीद कर रहे हैं। इसके बदले में, अमेरिका प्रतिबंध हटाने की बात कर सकता है, लेकिन पहले ईरान को अपनी मिसाइल कार्यक्रम और क्षेत्रीय गतिविधियों पर भी नियंत्रण दिखाना होगा। ट्रंप ने 10 से 15 दिनों का समय दिया है, जिसमें समझौता हो या फिर सैन्य कार्रवाई का सामना करे। ये मांग अमेरिका के लिए इजराइल की सुरक्षा और मध्य पूर्व में अपना प्रभाव

वार्ता की शुरुआत और पृष्ठभूमि

बनाए रखने से जुड़ी है, जहां ईरान के समर्थित समूह जैसे हिजबुल्लाह और हूती विद्रोही सक्रिय हैं। दूसरी तरफ, ईरान कह रहा है कि उसका परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण ऊर्जा के लिए है, और वह शून्य संवर्धन पर सहमत नहीं होगा। विदेश मंत्री अराघची ने कहा कि अमेरिका ने संवर्धन बंद करने की मांग नहीं की, लेकिन अमेरिकी पक्ष ने इसकी पुष्टि की कि ये उनकी मुख्य शर्त है। ईरान प्रतिबंध हटाने, तेल निर्यात की आजादी और आर्थिक राहत चाहता है, और वह 3 से 5 साल के लिए संवर्धन निलंबित करने का प्रस्ताव दे सकता है। लेकिन ईरान की रेड लाइन है अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय प्रभाव, जहां वह अमेरिकी दबाव को बर्दाश्त नहीं करेगा। दोनों पक्षों की ये मांगें छिपे हुए हितों को दर्शाती हैं – अमेरिका के लिए ये वैश्विक नेतृत्व और सहयोगियों की सुरक्षा है, जबकि ईरान के लिए राष्ट्रीय गौरव और आर्थिक स्वतंत्रता। अगर समझौता हुआ तो दोनों को कुछ छोड़ना पड़ेगा, लेकिन रेड लाइन्स पार करने से बात बिगड़ सकती है। विशेषज्ञ मानते हैं कि ये मांगें बातचीत को मुश्किल बना रही हैं, लेकिन डिप्लोमेसी का रास्ता अभी खुला है। कुल मिलाकर, ये छिपे पहलू बताते हैं कि समझौता सिर्फ परमाणु मुद्दे पर नहीं, बल्कि बड़े भू-राजनीतिक खेल पर निर्भर है।

हाल की प्रगति और चुनौतियां

हाल की वार्ताओं में कुछ प्रगति हुई है, लेकिन चुनौतियां अभी भी बरकरार हैं, जो समझौते की संभावना पर सवाल उठाती हैं। फरवरी 2026 की शुरुआत में ओमान में पहली बैठक के बाद, जेनेवा में दूसरी बैठक 17 फरवरी को हुई, जहां दोनों पक्षों ने सकारात्मक टिप्पणियां कीं। ईरान के विदेश मंत्री अराघची ने कहा कि बातचीत रचनात्मक रही और सिद्धांतों पर सहमति बनी, और वे अगले 2-3 दिनों में एक मसौदा प्रस्ताव अमेरिका को भेजेंगे। अमेरिकी पक्ष ने भी प्रगति मानी, लेकिन कहा कि अभी बहुत कुछ बाकी है। ट्रंप ने कहा कि बातचीत अच्छी चल रही है, लेकिन अगर 10-15 दिनों में समझौता नहीं हुआ तो ईरान को बुरे परिणाम भुगतने पड़ेंगे, जिसमें सीमित सैन्य हमलों की बात शामिल है। मध्य पूर्व में अमेरिकी सैन्य तैनाती बढ़ रही है, जिसमें दो एयरक्राफ्ट कैरियर और दर्जनों लड़ाकू विमान शामिल हैं, जो ईरान पर दबाव बनाने का तरीका है। ईरान ने इस तैनाती को अनावश्यक बताया और कहा कि ये क्षेत्रीय स्थिरता के लिए हानिकारक है। चुनौतियां मुख्य रूप से दोनों के अलग-अलग दृष्टिकोण से हैं – ईरान कहता है कि अमेरिका ने संवर्धन बंद करने की मांग नहीं की, जबकि अमेरिकी अधिकारी कहते हैं कि ये उनकी मुख्य शर्त है। इसके अलावा, ईरान का प्रस्ताव क्षेत्रीय संवर्धन सुविधा बनाने का है, जो अमेरिका की मांग से मेल नहीं खाता। विशेषज्ञों का मानना है कि ईरान समय खींचने की कोशिश कर रहा है, ताकि हमलों को टाला जा सके, लेकिन ट्रंप की सरकार जल्दी नतीजा चाहती है। ये प्रगति छिपे हुए खतरे भी दिखाती है, जैसे अगर बात बिगड़ी तो युद्ध हो सकता है, जो पूरे क्षेत्र को प्रभावित करेगा। फिर भी, दोनों पक्ष डिप्लोमेसी पर जोर दे रहे हैं, और अराघची ने कहा कि समझौता पहुंच में है अगर निष्पक्ष हो। कुल मिलाकर, हाल की घटनाएं उम्मीद जगाती हैं, लेकिन चुनौतियां बताती हैं कि रास्ता आसान नहीं है।

संभावित परिणाम और छिपे पहलू

समझौता वार्ताओं में कई छिपे पहलू हैं, जो संभावित परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं और दोनों देशों के लिए बड़े निहितार्थ रखते हैं। अगर समझौता हुआ तो ईरान को प्रतिबंधों से राहत मिलेगी, जिससे उसकी अर्थव्यवस्था सुधरेगी और तेल निर्यात बढ़ेगा, लेकिन उसे अपने परमाणु कार्यक्रम पर अंतरराष्ट्रीय निगरानी स्वीकारनी होगी। अमेरिका के लिए ये जीत होगी, क्योंकि ये इजराइल और अरब सहयोगियों की सुरक्षा मजबूत करेगा और ट्रंप की "अधिकतम दबाव" नीति को सही साबित करेगा। लेकिन छिपा पहलू ये है कि ईरान अपनी मिसाइल क्षमता और क्षेत्रीय प्रभाव को नहीं छोड़ेगा, जो भविष्य में नए टकराव पैदा कर सकता है। अगर समझौता नहीं हुआ तो अमेरिका सीमित हमलों पर विचार कर रहा है, जो ईरान के परमाणु स्थलों को निशाना बना सकते हैं, लेकिन इससे बड़ा युद्ध छिड़ सकता है, जिसमें हूती और हिजबुल्लाह जैसे समूह शामिल हो सकते हैं। ईरान ने चेतावनी दी कि क्षेत्र में अमेरिकी ठिकाने वैध लक्ष्य बन जाएंगे। विशेषज्ञ मानते हैं कि ईरान कमजोर स्थिति में है, क्योंकि उसकी अर्थव्यवस्था दबाव में है, लेकिन वह दबाव में नहीं झुकेगा, जैसा पेजेशकियन ने कहा। अमेरिका के लिए छिपा खतरा ये है कि हमले से वैश्विक तेल कीमतें बढ़ सकती हैं और उसकी छवि प्रभावित हो सकती है। दोनों पक्षों की आंतरिक राजनीति भी भूमिका निभा रही है – ट्रंप को जल्दी सफलता चाहिए, जबकि ईरान में कट्टरपंथी समझौते का विरोध कर सकते हैं। संभावित परिणाम में विलंब भी शामिल है, जहां ईरान प्रस्ताव देकर समय खींचे। कुल मिलाकर, ये छिपे पहलू बताते हैं कि समझौता सिर्फ परमाणु मुद्दे पर नहीं, बल्कि लंबे समय की रणनीति पर निर्भर है, जो क्षेत्रीय शांति या अस्थिरता ला सकता है।

क्या बन पाएगी सहमति?

ईरान और अमेरिका के बीच सहमति बनना अभी अनिश्चित है, लेकिन डिप्लोमेसी की संभावना बरकरार है, जो विचार करने लायक है। विशेषज्ञों का कहना है कि दोनों पक्षों की सख्त स्थिति के बावजूद, हाल की बातचीत से कुछ उम्मीद बंधी है, जैसे अराघची का मसौदा प्रस्ताव तैयार करना। अगर ईरान 3-5 साल के निलंबन पर सहमत होता है और अमेरिका प्रतिबंध हटाता है, तो सहमति संभव है, जो ट्रंप के कार्यकाल को कवर करेगा। लेकिन मुख्य बाधा शून्य संवर्धन है, जहां ईरान पीछे नहीं हटेगा, और अमेरिका अपनी मांग पर अड़ा है। ट्रंप की 10-15 दिनों की समयसीमा दबाव बढ़ा रही है, लेकिन ईरान ने कहा कि कोई अल्टीमेटम नहीं है और वे शांतिपूर्ण समाधान चाहते हैं।

सहमति बनने से मध्य पूर्व में तनाव कम होगा, तेल कीमतें स्थिर होंगी और वैश्विक अर्थव्यवस्था को फायदा मिलेगा। लेकिन अगर नहीं बनी तो सैन्य टकराव का खतरा है, जो बड़ा युद्ध बन सकता है। दोनों देशों की आंतरिक चुनौतियां भी प्रभाव डाल रही हैं – ईरान में आर्थिक दबाव से समझौते की जरूरत है, जबकि अमेरिका में चुनावी साल नहीं होने से ट्रंप सख्त रह सकते हैं। छिपा पहलू ये है कि ओमान जैसे मध्यस्थ देश मदद कर रहे हैं, जो पुल का काम कर सकते हैं। कुल मिलाकर, सहमति बन सकती है अगर दोनों समझौता करें, लेकिन इतिहास बताता है कि ऐसे मुद्दों पर अक्सर विलंब होता है। ये स्थिति विचारोत्तेजक है, क्योंकि ये सिर्फ दो देशों की नहीं, बल्कि वैश्विक शांति की बात है।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

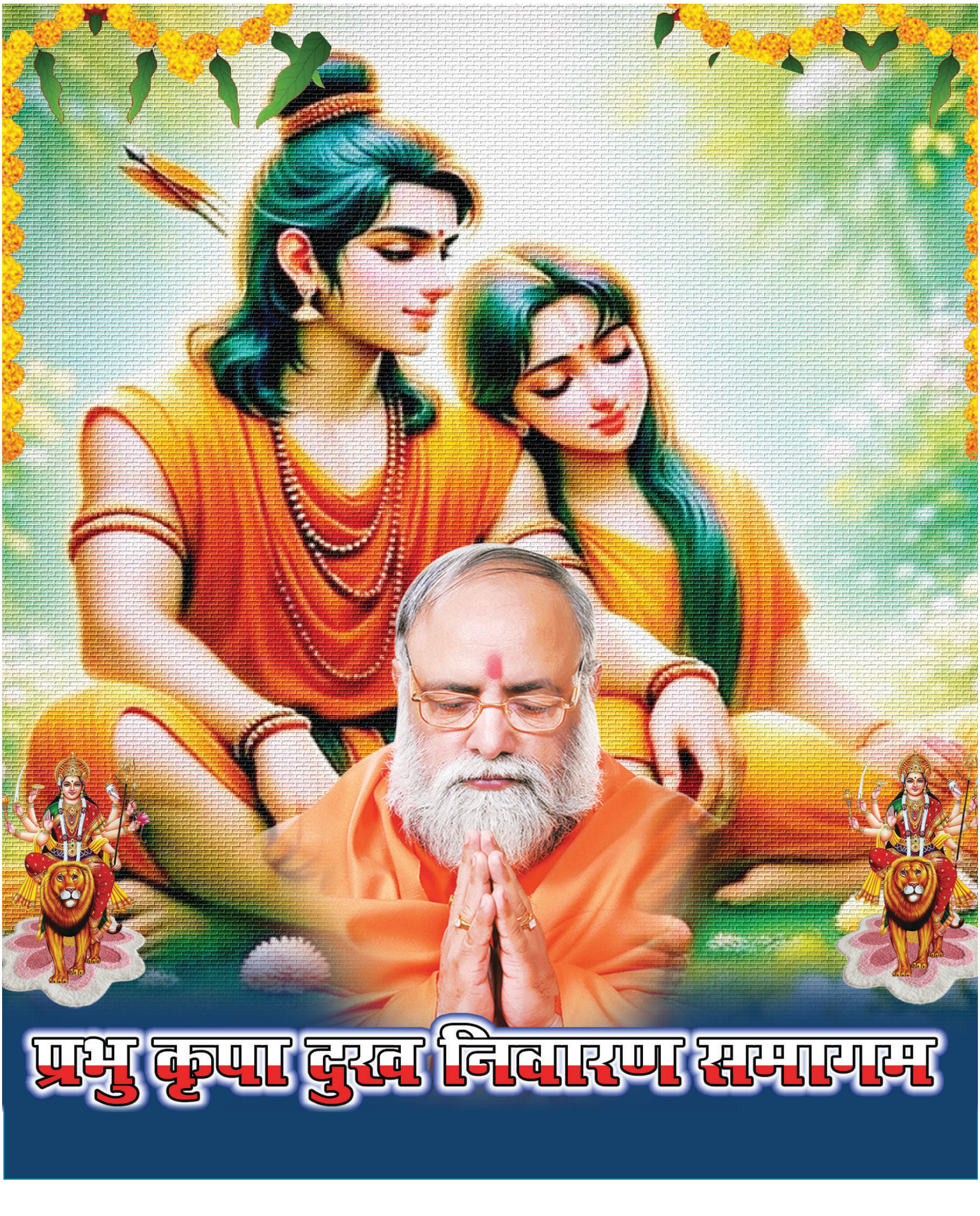

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries